श्री

गोस्वामिश्री

श्रीगुसांईजीकृत नवरत्नप्रकाश.

तथा तेनी श्रीपुरुषोत्तमजीकृत

विवृत्तिनुं गुजराती भाषांतर.

रचनार

चिरंजीवी लालजी गोस्वामि श्रीविठ्ठलरायजी.

आपनी आज्ञा लईने वैष्णव ठा० दयाल मूलजीयें

मूलग्रंथ सहित

श्री मुंबापुरीमध्यें

जगदीश्वर छापखानामां छपावी प्रसिद्ध कर्युं.

संवत् १९३९ ना चैत्र शुद्ध तृतीयायां बुधवासरे

तारीख १० मी एप्रिल सने १८८३.

नुछावर रु० १)

सूचना.

अशरण शरण शरणागत वत्सल कृपासिंधु दीनबंधु गोस्वामि श्री विठ्ठलरायजीने दासानुदास ठक्कर दयाल मूलजीनी दैन्य पूर्वक विनंति ए छे जे आप श्रीयें जे टीका लखी लेवानी मने गुलामने आज्ञा कीधी अने ते शोधावीने पाछी लखावी, पण ते लखवामां मारी अल्पबुद्धि तथा मंदबुद्धि वालानी चूक घणी थई हशे, ते आप श्री कृपा करीने क्षमा करशो. एज महारी विनंति छे.

सर्व ग्रंथ वांचनारा वैष्णवोने हुं ठक्कर दयाल मूलजी नम्रता पूर्वक विनति करुं छुं के कथा लखतां वखतें महारी अल्प तथा मंदबुद्धि वालानी जे जे चूक थई होय ते सर्व वैष्णवोएं महारी उपर कृपा करीने क्षमा करवी.

आ ग्रंथमां जे जे ठेकाणे कठिण शब्दो देखवामां आव्या छे, तेनो अर्थ एज ग्रंथना सेवटना (९४) मा पेजमां प्रथम एक कोष्टकमां

ते कठण शब्द लखीने पछी बीजा कोष्टकमां ते
नो अर्थ कर्योछे त्यांथी जोई लेवो.

आ प्रस्तावना शोले ग्रंथो बाबतनी छे. तेथी
ज्यारें बधाय ग्रंथ छपाईने भेला थाय, त्यारें ते
मां प्रथम ग्रंथ जे यमुनाष्टक तेनी टीकाथी पहेलो
पानामां ग्रंथ बधा साथें जोडती वखतें नाखवा,
अथवा जेने ए ग्रंथो छूटाज राखवा होय तेणे ब
ध्धा ग्रंथोनी आ एकज प्रस्तावना समजवी.

प्रस्तावना.

वेदादि शास्त्रना सारात्मक सिद्धांतरूप पुष्टिमार्गना प्र
वर्त्त कर्त्ता श्री मदाचार्य चरणोएं पोताना मार्गानुवर्त्ति वैष्णा
वो उपर कृपा करीने वेदशास्त्रनां प्रमाणवचनो सहित संस्कृ
त ग्रंथो कर्या छे. अने तेमनी टीका आचार्य वंशीय गो-
स्वामिवर्योयें संस्कृतमांज करी छे. पण हमणाना घणा
खरा वैष्णवोने संस्कृतनुं ज्ञान न होवाथी संस्कृत ज्ञानवि-
नाना एवा जिज्ञासु वैष्णवो पण पोताना मार्गमां शिथि-
ल थईने आरूढ पतित पणाने पामता जोईने पृथ्वी दि-
ग्विजय करनार गोस्वामि श्री पुरुषोत्तमजीयें शास्त्र प्रमा
णवचनो सहित पूर्वोक्त ग्रंथो उपर टीकाओ करी छे. तेम
ध्येंथी जेटली टीकाओ आप श्रीने मली छे ते उपरथी सां
प्रत गोस्वामि श्री लालमणिजी सुत श्री विठ्ठलरायजी नि
त्य पोताना मंदिरमां कथा करेछे पण श्रोता जन संसारा
सक्त होवाथी ए भाषणनुं अक्षरशः अवधारण करी श
कता नथी. एम जोई तेमनी उपर कृपा करीने ते कथा गुर्ज
र भाषामां लखी लेवाने वैष्णव दयाल मूलजीने आप श्रीएं
आज्ञा करी. ते आज्ञाने अनुसरीने ए कथा सर्व वैष्णवद
याल मूलजीएं लखी लीधी, पण कथा श्रवण करवा आवना
रा वैष्णवोएं आप श्रीने दैन्यपूर्वक विनति करी के, लखी ली
धेली कथा सर्व छपावी बाहेर पडाय तो सारुं, के जेथी सर्व
जिज्ञासु वैष्णवोने पोताना अवकाशना वखतमां जरावार पण
वांचवाथी तेमने पोताना जन्म वृथा जावानुं कांईक ज्ञान था
य. अने भगवत्कथामां तथा भगवत्सेवामां रुचि थाय. एवा

हेतुथी ए ग्रंथोनी टीका छपावी बाहेर पाडवाने आप श्री विठ्ठलरायजीने विनति करी, त्यारें आपश्रीयें विचार्युं के ग्रंथो छपाववा ए केटलाएक बालकोने तथा अमोने पण रुचता नथी. पण छपाव्याविना पुस्तकोना थोडापणाथी, भगवत्कृपाथी वैष्णवो थया, तोए पण ग्रंथो मल्याविना ग्रंथना अबोधथी आवा उत्कृष्ट मार्गमां पुरुषोत्तमना संबंधनुं तथा सेवा वगेरेनुं सुख अनुभवमां आवतुं नथी. एवी महोटी खामी जोईने छपाववुं जोइएं. पण एकला जिज्ञासु वैष्णवोनेज आपवाथी छपाववा बाबतनो दोष पेदा थायछे, ते नहि थाय? एम विचारीने ए विनति अंगीकार करीने ए ग्रंथो छपाव्या छे. तेथी प्रत्येक गाममां जे जे वैष्णवोने बीजाने पुस्तक आपवाने मोकल्यां होय तेमणे उपर लख्याप्रमाणेनां जिज्ञासु वैष्णवोनेज आपवा केमके छपाववानो हेतु घधारे पुस्तको खपाववा वगेरे मतलब उपर नथी.

श्री

श्रीकृष्णायनमः

श्रीमदाचार्यश्रीविठ्ठलेश्वरचरणकमलेभ्योनमः

श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः

अथ

श्रीगुसाईजीकृत नवरत्नप्रकाश तथा तेनी श्रीपुरुषोत्तमजीकृत विवृत्तिनुं गुजराती भाषांतर प्रारंभ करियें छैयें.

त्यां प्रथम मंगलाचरणनो श्लोक.

चिंतासंतानहंतारो, यत्पादांबुजरेणवः ॥ स्वीयानां तान्निजाचार्यान्, प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥१॥ ॥ छ ॥

अर्थः- पोताना होयछे तेमनी चिंताना संतान जे अविश्वासादिक छे, तेमने श्रीमदाचार्यनां चरणकमलनी रज छे, ते हणेछे एवा जे श्रीआचार्यजी तेमने वारंवार नमस्कार करुं छुं. एम कहीने आप शंका करे छे जे भगवदीयोने चिंता केम पेदा थाय एम कहीने आप आज्ञा करे छे जे "इथ्थं" एटले आ रीतें जे श्रीमदाचार्यजीए सिद्धांतरहस्यमां समर्पण एटले आत्मनिवेदन

करयां पछीना अने पहेलाना दोषो जे लागे, तेमना वि
नाशनो उपाय, भगवाने कह्यो छे. तोए पण ताहाना
कहेला प्रकारने भोगसाधकपणाएं करीने लौकिक
भोगने अनुसारीपणुंज छे पण सेवाना प्रतिबंध म
टाडनार पणुं पण नथी. तेथी ते विना सेवाने आधि
दैविकी पणुं आवतुं नथी, त्यारें भगवानमां चित्तना
प्रवणरूपी मानसी सेवानो असंभव पण जोईने का
ल एटले वखत, प्रारब्ध, अने स्वभावें करीने क्षण
क्षणमां पेदा थाता एवा सेवाफलग्रंथमां कहेला उ-
द्वेग प्रतिबंध अने भोग तेमनी निवृत्ति सारु सेवा
फलग्रंथनी टीकामां सविघ्नपणाथी अने अल्पपणा
थी लौकिक भोग त्याग करवा लायक छे. ए रीतें लौ-
किक भोगनी निवृत्ति सारु तेना स्वरूपना विचारने
ज तेनी निवृत्तिना उपायपणाएं करीने कहेला पणुं
छे. अने साधारण प्रतिबंध मटवा सारु त्यां पहेलो
जे साधारण प्रतिबंध बुद्धिएं करीने छोडवो ए वचनें
करीने बुद्धिनेज मटवाना उपायपणाएं करीने कह्या
पणुं छे. तेथी अने उद्वेग मटवा सारु कांई पण साधन

कह्युं नथी. तेथी कांईक बुद्धिरूपी साधन कह्युं जोइए.
अने जोपण अतत्व निर्धार अने अविवेक ए प्रतिबंधने
पेदा करनारा छे. एम उपर लखेली टीकामां कह्युं छे ते
थी तेना प्रतियोगी एटले समोवडीया जे तत्वनिर्धार
अने विवेक, एमने प्रतिबंध मटवानुं साधन पणुं सूच
व्युं छे तोए पण तत्वनिर्धारना स्वरूपने क्यांही पण
कह्युं नथी. अने विवेकधैर्याश्रय ग्रंथमां विवेक कह्यो छे,
तोए पण आश्रय सिद्ध करवा लायक कह्यो छे. अने से-
वाने आधिदैविकी पणुं थावा सारु लौकिक अने अलौ
किक निर्वाहनो प्रकार पण त्यां कह्यो छे. ते रीतें भगवा
ननी याद राखनाराओने आ लोक अने परलोकनी
चिंतानुं कारण दूर थई गयुं छे. त्यारें शेणें करीने चिंता
पेदा थाये? जे मटवा सारु आ नवरत्न ग्रंथ करवो प
ड्यो एम अभिप्राय सहित भगवदीयोने केम चिंता पेदा
थाये? ए प्रश्न वचनने आगल करीने उपर लखेला ग्रं
थनी रीतथी चालनाराओने चिंता पेदा थायज नहिं.
ए रीतें चिंतानी उत्पत्तिनुं खंडन कर्युं. त्यारें उपर लखे
ला ग्रंथनी रीतथी चालनाराओने जेवी चिंता पेदा था

य छे, ते प्रकार केहेवा सारु निवेदनने अधिकारपणुं अने तेनो प्रकार, कोई ग्रंथमां कह्यो नथी, तेथी ते प्रकारने कहेवा वगेरेएं करीने निवेदननुं जरुरपणुं दृढ करवा सारु जेमने लौकिक चिंता नथी. ते भगवदीय छे ए भगवदीयोनुं स्वरूप बतावचा सारु पहेलांथी जणाव्यो जे चिंता पेदा थवानो प्रकार, तेने कहेता श्रीगुसाइजी त्यांहां हेतुनी विकल्पना कहे छे, ते उपर कह्या प्रमाणे इत्थं शब्दें करीने आज्ञा करे छे जे भगवदीयोने चिंता केम पेदा थाये? त्यां कहे छे जे आरीतें थाय छे. जे आत्मनिवेदन जेमणें कर्युं होय, ते भगवत्सेवाने योग्य थाय छे, बीजा नथी थाता. हवे निवेदन करवा पछी चिंता शेनी थाये? केमके श्री गीताजीमां कहेलुं छे. (गी० अ० ९ श्लो० २२)

अनन्याश्चिंतयंतो मां, ये जनाः पर्युपासते ॥
तेषां नित्याभियुक्तानां, योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

अर्थः- जे अनन्य एटले भगवान विना जेने बीजुं इष्ट नथी ते चारे तरफथी म्हारुं चिंतवन करता करता म्हारा समीपमां म्हारो आश्रय करे छे एवा जे छे ते नित्य म्हारा सन्मुखपणायें करीने म्हारे विषे एकाग्र चित्तवाला

छे तेमनो योग जे प्राप्ति अने क्षेम एटले होय तेनी रक्षा हुं चलावुं छुं. तेथी आत्मनिवेदीओने चिंता शेनी करवी जोइए? नज करवी. पण त्यां एवी चिंता थाय छे? के निर्वाह निवेदित अर्थे करीने करवो, के अनिवेदित अर्थे करीने करवो. एवी चिंता थाय छे ते मटवा सारु आ ग्रंथ करवो पड्यो, एम चिंताना संभवमां हेतुनी विकल्पना करीने आद्य पक्षनो परिहार करे छे. के निवेदित अर्थे करीने निर्वाह करवो ए पक्ष घटतो नथी, केमके भगवदीयोथी भगवाननी जणश भगवाननी इच्छा विना लेवाय नहिं एम छे, अने भगवाननी इच्छा जाणवामां अशक्यपणुं छे केमके एकादश स्कंधमां ओगणीसमा अध्यायमां भगवदीयोना धर्मो "श्रद्धामृतकथायां मे" ए वचने करीने कह्या छे. ते धर्मो शरीरनी स्थिति विना बनता नथी तेथी शरीरनी स्थितिना हेतुने ठरावतां निवेदित अन्नादिकें करीनेज निर्वाहने ठरावे छे तेथी इच्छा जाणी शकाय नहिं एम नथी. एटले जाणी शकाय छे, त्यारें चिंता शेनी पेदा थाय? ते उपर प्रकाशमां लखे छे के वस्तुतः इच्छा होये तो पण स्वामीनी वस्तुनुं ग्रहण करवुं, सेवकने उ-

चित नथी, केमके भगवद्वाक्यना तात्पर्यज्ञाननो अभा
व छे. तेथी अनुचित छे. ते उपर विवृत्तिमां श्री पुरुषो
त्तमजी आज्ञा करे छे जे सेवक ए विशेषण हेतु गर्भ छे
तेथी इच्छानुं ज्ञान थाय, तो पण प्रत्यक्ष आज्ञा विना ग्र
हण करे तो भक्तिमार्गथी विरुद्ध जे स्वतंत्रना ते रूपी दो
ष पेदा थाय छे एवो अर्थ "सेवकस्य" ए विशेषणें करी
ने जणावे छे. फरी बीजा प्रकारथी उपयोगना उचितप
णानी आशंका करीने परिहार करेछे. प्रकाशमां कहे छे
जे भगवानना देहादिक तेनुं पोषण भगवाननी वस्तु
थी करवुं तेमां अनुचित शुं छे? एम न कहेवुं. कारण के ते
दोषावह एटले दोष पेदा करे छे हवे दोषावहनुं स्वरूप श्री पुरु
षोत्तमजी आज्ञा करे छे जे देहादिकने भगवदीयत्व छे,
तो पण पोतापणानुं अभिमान गयुं नथी तेथी दोष पे-
दा करे छे. ए रीतें पहेला हेतुनो परिहार करीने बीजा हे
तुनो परिहार श्री गुसाइजी 'न द्वितीय' ए वचनें करी
ने करे छे एटले अनिवेदित अर्थे करीने पण निर्वाह क
रवो नहिं केमके सेवकनो ए धर्म नथी ते वात ठरावे छे
जे निवेदन करेला अर्थ तेना पोषणादिक सारु तेना

विचारने पण अनुचितपणुं छे केमके तेनुं अभिमान करे जे महारो छे तो भगवदीयत्वनो असंभव थाय छे. हवे तेनो खुलासो श्रीपुरुषोत्तमजी निवृत्तिमां करेछे जे भगवाने आ आत्म समर्पण ते पोतापणाना अभिमानना त्याग सारुज "आत्मनिवेदिनां" ए अधिकारीना विशेषण पणाएं करीने कह्युं छे. ए निवेदन पहेलुं करीने सेवा करवी, ए सेवा करवाने महद्भिमृग्य भक्तिरूपी महोटाईनुं साधकपणुं छे, नहिंतो श्रीमत् भागवतना ओगणीशमा अध्यायमां कहेला धर्मो, पहेला अगिआरमा अध्यायमां पण कह्या छे, त्यारें आहिं एटले ओगणीशमा अध्यायमां कहेला धर्मो मां काहिं विशेषता रहेती नथी, त्यारें उत्तम भक्तिना कारण केहेवानी जे प्रतिज्ञा ते रद थाय, पण उत्तम पणुं तो ऊपर कहेला अर्थथी एटले पहेला आत्मनिवेदन करीने सेवा करवी, तेथीज सिद्ध थाय छे, ते विना थतुं नथी एज उत्तम पणुं बीजुं नहिं एम ज्यारे थयुं त्यारे ओगणीशमा अध्यायमां कहेला धर्मोने उत्तम पणुं न मानीयें, तो महोटा पुरुषने शोधवा लायक जेउ-

त्तम भक्ति तेनुं कारणपणुं ओगणीशमा अध्यायमां कहेला धर्मोने थाय नहीं, त्यां एम कहेजे ए तो गमतुं थयुं, एम न कहेवुं, एम कह्याथी ओगणीशमा अध्यायना धर्मोने परपणानुं एटले उत्तमपणानुं वचन एटले केहेवुं, तेनो विरोध आवे, तेथी जेम बीजी निवेदन करेली जणाशोमां आ एटले आत्मनिवेदन जेणे कर्युं होय ते अभिमान करतो नथी, एटले महारा छे एम जाणतो नथी. तेम देहादिकमां पण घटे छे जो निवेदन कर्‍या विनानी जणशो एं करीने देहादिकनो निर्वाहनो विचार करे तो देहमां पोतापणाना अभिमानने दृढपणानी प्राप्तिथी पोतानो धर्म जे भगवदीयना धर्म तेनो विरोध थाय. ए अर्थ "दोषावहत्वात्" ए एटले दोषने पेदा करनारपणाथी ए पदनो खुलासो छे ए रीतें चिंताना जे बे हेतु तेनो परिहार करीने जे रीतें चिंता थाय, ते प्रकारनी आज्ञा करे छे के एम ज्यारें थयुं त्यारें देहादिकना नाशना संभवथी भजननो असंभव थईने निवेदनने व्यर्थापत्ति थाय छे अने आ मार्गनो उच्छेद पण था

यछे अने निवेदन करे तो भजननो अधिकार थाय अने अधिकार थयो एटले उपर लखेली रीते निर्वाह न थाय. त्यारें बेहु तरफथी पाशा रज्जु आवेछे ए प्रकाशनां वचनो छे. ते उपर श्री पुरुषोत्तमजी खुलासो करेछे जे ए रीतें देहादिकना निर्वाहना बे प्रकारनो बाध थयो त्यारें देहादिकनो नाश थाय, तेथी भजननो असंभव थईने निवेदनने व्यर्थापत्ति थायछे अने परिचर्यारूपी भक्तिमार्गनो उच्छेद थाय त्यारें भगवानें भक्तिना अधिकारनुं जे वाक्य ते भक्तिना परम कारणना वाक्यमां अ्याभिप्रायें करीने कह्युं छे ते वचनना अर्थनुं ज्ञान न थयाथी तेनुं कहेलुं करवुं तेने पण अंगहीन पणुं थाय छे तेथी परम भक्तिनो केम लाभ थाय? एरीतें चिंता थाय छे ए अर्थ छे, एम चिंताना संभवनो ठेराव आगल करीने आत्मनिवेदननुं जरुरपणुं रह्युं नहीं, त्यारें प्रमाण पुरस्सर तेना आवश्यकपणाने ठेरावता बेहु तरफनी पाशनी दोरडीने दूर करेछे. हवे प्रकाशमां श्री गुंसांइजी कहेछे जे आत्मनिवेदन थयुं त्यारें भजनाधिकार था-

य अने ते थयापछी उपर कह्या प्रमाणे शरीरनो नि र्वाह न थाय? एवी शंका थाय तिहां कहे छे जे,स्त्री, पुत्र, घर, प्राण, एमनुं पुरुषोत्तमने विषे निवेदन करवुं एवी रीतें आत्मनिवेदी मनुष्योने म्हारे विषे भक्ति थाय छे ए रीतनां वचनोएं करीने आत्मनिवेदनमां आवश्यकता छे ते बतावे छे ते उपर श्लोक (भा.ए. अ.३, श्लो.२८) दारान् सुतान् गृहान् प्राणान्, यत्परस्मै निवेदनं॥ अर्थः--स्त्री,पुत्र,घर,प्राण, एमनुं पुरुषोत्तमने अर्थे समर्पण करवु॥ एवं धर्मै र्मनुष्याणामुद्धवात्मनिवेदिनां॥ मयि संजायते भक्तिः, कोन्योर्थोस्यावशिष्यते॥ अर्थः-हे उ-द्धवजी! जे आत्मनिवेदी मनुष्यो छे, तेमने एवा ध र्मोएं करीने मारे विषे भक्ति थाय छे.एथी उपरां त कांई पण पुरुषार्थ बाकी रहेतो नथी ए वगेरे व चनोएं करीने निवेदन जरुर जोयें. ते उपर श्री पु रुषोत्तमजी खुलासो करे छे जे आ उपर लखेला "दा रान् सुतान्" ए वाक्यो एकादश स्कंधमां प्रबुद्धयो गेश्वरना वचन (भा०ए० श्लो०) तत्र भागवता-

नू धर्मान्, शिक्षेद्गुर्वात्मदैवतः ॥ अमाययानुवृ
त्यायैस्तुष्येदात्मात्मदोहरिः ॥ अर्थः- त्यां भ
क्तिमार्गना धर्मगुरु पोतानां देवता जाणीने शीखवे अ
ने कपट वगर तेमनी मरजी प्रमाणे चाले तो आत्म-
रूप अने पोतानुं स्वरूप आपी देनारा जे हरि एट-
ले दुःख हरनारा भगवान प्रसन्न थाय ए वचन भग
वानने प्रसन्न करवाना कारण रूप धर्म कहेवानो
आरंभ करीने ताहां कहेलुं छे जे स्त्री आदि लईने भ
गवानना उपयोगी पणाएं करीने समर्पण करवा ते
गुरुपासेथी शीखवुं, एवो त्यां श्लोकना पदनो अर्थ
छे तेथी स्त्री वगेरेना निवेदनने भगवानना संतोषनुं
कारणपणुं बतावे छे. अने "एवं धर्मैः" ए बीजुं व-
चन तो भगवाने भक्तिना परम कारण कहेवानो
आरंभ करीने भक्तिना अधिकारीनुं "आत्मनिवे-
दिनां" ए विशेषण बताववा सारु कहेलुं छे तेथी
ते ठेकाणे निवेदननुं आवश्यकपणुं बतावे छे हवे
प्रकाशमां आदि पदें करीने "दास्येनात्म निवेदनं"
एटले दासपणाथी आत्मानुं निवेदन करवुं ए भग

वाननुं वचन अने "स्वगोत्रवित्तात्मसमर्पणेन" एटले पोतानुं गोत्र, पईशो, अने आत्मा तेना समर्पणें करीने ए बलीना आचारमां बतावनारुं वाक्य पण लेवाये छे. ए वचनो एं करीने पोतानां सर्व सहित आत्मानुं समर्पण ते भक्तिमार्गमां जरुर करवालायक छे, तेमां हेतु अने दृष्टांत प्रकाशमां आज्ञा करे छे. जे साक्षात् श्री गोकुलेश जे भगवान् तेमनी सेवाना अधिकार रूपी ए निवेदन छे तेथी जरूर करवालायक छे ए प्रकाशनां वचन वगेरे एं करीने एकादशस्कंधनां वचनोनो अर्थ स्फुट करे छे, एम श्री पुरुषोत्तमजी आज्ञा करे छे त्यां शंका थाय, जे ए धर्मे करीने मनुष्योने भक्ति थाय छे ए वचनमां पोताना करेला धर्मो करतां मनुष्यपणुं पहेला रहेलुं छे, तेथी मनुष्यपणामां धर्मोना हेतुपणाथी अन्वय थतो नथी. तेथी आत्मनिवेदनमां धर्मोने कारणपणाएं करीने तमाराथी पण "आत्मनिवेदिनां" ए मनुष्यनां विशेषणमां धर्मोने कारण पणुं ते सारी रीतें कहेवाय छे. तेथी

आत्मनिवेदनमांज धर्मने हेतुपणुं छे. अने आत्म
निवेदनने भक्तिमां हेतु पणुं छे. ए वात उघाडी छे
तेथी आत्मनिवेदनने धर्म करवामां अधिकारपणुं
अयुक्त छे एवी आशंका करी साक्षात् क्रिया मू-
कीने धर्म करीने एम कहेवुं, तेमां बीज नथी. कार
णके धर्म जो आत्मनिवेदनरूपी फलमां उपक्षी
ण थाय तो आत्मनिवेदन कर्यापछी धर्म करवा
नी जरूरज रहेती नथी एम थाय ए पण एकजा
तनुं दूषण छे. दासपणाथी आत्मनिवेदन पहेलां
कह्युं छे, दासपणाथी जे न्यून श्रद्धामृत कथादि ध
र्म तेथी पेदा थयेलुं जे आत्मनिवेदन ते परम कार
ण केम कहेवाय? तेथी आत्मनिवेदनने अधिकार
पणुं जणाववा सारु "आत्मनिवेदिनां" ए विशे-
षण छे, एवुं आ वचन छे. एवो निश्चय छे, एम
जाणवुं, त्यारें ठर्युं शुं? जे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य,
ए त्रण वर्णमांथी हरेकने वेदना कर्मनो अधिकार
छे पण गायत्रीना उपदेशथी पेदा थयेला संस्कार
विना तेमने वैदिक कर्म करवानी योग्यता थती नथी

तेमज नीचेना श्लोकमां छे (भा० स० श्लो०)

देवोऽसुरोमनुष्योवा, यक्षोगंधर्व एवच ॥ भ-
जन्मुकुंदचरणं, स्वस्तिमान्स्याद्यथावयम् ॥

अर्थः-देव, असुर, मनुष्य, यक्ष, गंधर्व, ए मुक्ति
आपनारा जे मुकुंद भगवान्, तेमनां चरणारविंद
ने भजे ते सुखी थाय. ए प्रल्हादनुं वाक्य छे अने
वली एकादश स्कंधमां कह्युं छे. (भा० ए० श्लो०)

कोनुराजन्निंद्रियवान्, मुकुंदचरणांबुजम्॥
न भजेत्सर्वतो मृत्यु रुपास्यममरोत्तमैः ॥

अर्थः-हे राजा! मनुष्य छे तेने चारे तरफ मृत्यु छे,
अने मुकुंद एटले मृत्युथी छोडावनारा एवा भग
वाननुं चरणांबुज छे ते जे अमरमां पण उत्तम छे
एवा पुरुषोने उपासना करवा लायक छे एम छतां
इंद्रियवालो कोण एने नहिं भजे? ए वचनें करीने
हाथ पग छे तो आ केम न भजे? तोपण निवेदन वि
ना तेने महदभिलषित भक्तिनी योग्यता नथी था-
ती एवुं निवेदननुं स्वरूप न समजे, त्यारें भजननी
सिद्धि न थाये तेवात प्रकाशमां श्रीगुसांईजी खु

ळी करे छे एम विवृत्तिमां श्री पुरुषोत्तमजी कहे
छे नहिं तो निवेदित थयेली स्त्रीना परिग्रहनी
व्यर्थापत्ति थाये तेथी कहेली रीत प्रमाणें जरूर
तेजाणवुं जोएं अने भगवद्वाक्यमां "आत्म-
निवेदिनां" ए विशेषण छे तेथी आत्मनिवेदी न
थाय तो ते सेवामां काम नआवे तेथी कहीजे री
त ते रीतें गायत्री संस्कारथी उत्पन्न थयेलो जे उ
पनयन संस्कार ते एक एक माणसने थईने तेने
तेने वेदना कर्मनो अधिकार करे छे तेजेम, वेदना
कर्मनो उपकार करनारांजे देहादि निर्वाहमां का-
म आवे एवां जे भिक्षादिक कर्मो, तेमने जेम आ
डो आवतो नथी तेमज उपर कहेली रीतें निवेदन
रूपी जे संस्कार, ते भजनने उपकार करनारो ए
वो देहादि निर्वाहमां काम आवे एवो जे निवेदित
वस्तुनो उपयोग तेने आडो आवतो नथी तेथी
बेहु तरफनी फांशी नथी. ए एनो अर्थ छे. आहिं
जे दार पद मूक्युं छे तेमां पुत्राप्त ए सर्व आवी
गयां, 'उत्तर क्षण' एटले ते पछी तरत एवुं जे प

द छे ते जरुर करवा बाबतनुं छे. तरत करवुं एम
नथी. केम के अशक्योपदेश थाय अथवा नि
वेदन करेथी जो काम न आवे तो तरतज परि
ग्रहने व्यर्थापत्ति थाये एम अन्वय करे तो एमां
दोष नथी. ए रीतें उपर कहेला बे वाक्यनो विचा
र फरी कन्यो के दारादिनुं निवेदन, पोताना आ-
त्मा सहित कराय छे ते पोतानो जूदो धर्म छे. अने
स्त्रीओ वगेरे पोतें करे ते अधिकार सारुं एम जणा
य छे तेथी पोतानुं सर्वस्व निवेदन कर्युं तो पण पो-
त पोता सारु जुदुं करवुं जोएं तेथी बहु सुंदर आपें
आज्ञा करी जे एना परिग्रहनी व्यर्थापत्ति थाये ए व-
चन कह्याथी भगवदिच्छानुं ज्ञान थाय छे. त्यां कहे
छे जे ए रीतें बेहु तरफथी दोरडीनी फाशी दूर थाओ
तो पण भगवानने निवेदन कीधेली वस्तु पाछी केम
लेवाय? एवी शंका थाय, त्यां प्रकाशमां कहे छे. जे
दान कर्युं होय ते पोताने काम न आवे कांहि निवेदन
मां एम नथी एटले निवेदन कीधेली जणशो सम-
र्प्या पछी काम आवे छे त्यां शंका करे छे जे केम

काम आवे? त्यां कहे छे जे निवेदित जणशो छे तेनो भगवानने अर्थे भोग थवो. ते प्रसाद पोताने उपभोग करवो उचित छे, नहिं तो स्त्रीना परिग्रह ने व्यर्थापत्ति थाये. ए रीतें उभय पास निवृत्ति थाओ पण आज्ञाविना लेवाय तो तेमां दोष पेदा थाय, तेनुं केम? त्यां कहे छे जे दान कर्युं होय ते पोताना विनियोगमां आवतुं नथी. केम के दान एटले पोताना पणानो त्याग करवो अने बीजानी सत्ता तेमां पेदा करवी अने शास्त्रनी आज्ञाथी "तुभ्यमहंसंप्रददे" इत्यादि शब्दोथी संकल्प करीने आपवुं, तेनुं नाम दान ते जे जणशनुं कर्युं होय, ते जणस पाछी काम न आवे केम के तेमां दत्तापहार दोष आवे छे अने निवेदन एटले तदीयत्व अनुसंधान पूर्वक जेने निवेदन करुं छऊं तेनु छे एम पोतापणानुं तथा पोताना पणानुं अभिमान त्याग करे, पण पोतानी सत्तानो त्याग न करे, त्यारे एम ठर्युं जे पोताना अभिमानना त्यागने अनुकूल निवेदन करुं छऊं एमथाय ते पहेलाना कहेला व्या-

पारथी विलक्षण व्यापार थाय छे. ते ज्यारें करि एं, त्यारें निवेदन कीधेली जणशो उपर कहेली री तें पोताना विनियोगमां आवे, अने ते दत्तापहार दोष पेदा न करे. एम जो न होय तो निवेदित अन्न नुं भोजन न थाये अने अनिवेदित लेवानी रीत न थी अने पोताना पणानो त्याग अने बीजानी सत्ता पेदा करवी एने अनुकूल दान अने निवेदन बे जो सरखां मानियें अने कांई फेरफार नथी एम मा- नियें त्यारें पुराणमां अनिवेदित लेवाय नहिं, नि. वेदितज लेवाय, एम कह्युं छे ते वातने विरोध आवे तेथी दान अने निवेदन बेहु जूदां छे॥श्लोक॥

नैवेद्यशेषं तुलसीविमिश्रं,विशेषतःपादजले न सिक्तं॥ योऽश्नाति नित्यं पुरतो मुरारेः,प्रा प्नोति यज्ञायुत कोटिपुण्यं॥ अर्थः-भगवाननी आगल धरेलुं जेमां तुलसी समर्पी होय, अने वि शेषताथी चरणामृत छांट्युं होय अने ते प्रसाद भगवाननी आगल एटले मंदिरपासें जे खाय, ते दश हजार वखत करोड यज्ञनुं फल पामे॥ एम ह

रिवल्लभसुधोदयमां कह्युं छे.वली त्यांज कह्युं छे.
॥श्लोक॥ ॥षड्भिर्मासोपवासैस्तु, यत्फलं परिकीर्तितं॥ विष्णोर्नैवेद्य सिक्थेन, तत्फलं भुंजतः कलौ॥१॥ अर्थः- छ महिना उपवास कर्याथी जे फल थाय छे ते फल प्रभुना प्रसादनो एक कोलियो लेवाथी कलियुगमां थाय छे, हवे गरुडपुराणमां पण कह्युं छे ते ॥श्लोक॥ ॥पादोदकं पिबेन्नित्यं, नैवेद्यं भक्षयेद्धरेः॥ शेषाच मस्तके धार्या, इति वेदानुशासनं॥ अर्थः- हरिनुं चरणामृत ते नित्य पीवुं अने नैवेद्य एटले प्रभुने धरेलुं प्रसादी खावुं. अने शेष जे तुलसी माला वगेरे माथे चडाववां एवी वेदनी आज्ञा छे. वली ब्रह्मांड पुराणमां कह्युं छे ते ॥श्लोक॥ ॥पत्रं पुष्पं फलं तोयमन्नं पानाद्यमौषधं॥ अनिवेद्य न भुंजीत यदाहाराय कल्पितं॥ अर्थः- तुलसी वगेरेनां पान, कमल वगेरेनां फूल, फल अने जल, अने बीजी दूध वगेरे पीवानी जणशो अने ओषध ते प्रभुने निवेदन कर्यां वगर

खावुं नहीं ॥ अनिवेद्यच भुंजानः, प्रायश्चि
त्ती भवेन्नरः ॥ तस्मात्सर्वं निवेद्यैव, वि-
ष्णोर्भुंजीत सर्वदा ॥ अर्थः- निवेदन कर्या वग
र खाय तो खानारो प्रायश्चित्त करवा लायक थाय
माटे विष्णुने निवेदन करेलुंज सर्वदा खावुं॥ हवे
पद्म पुराणमां गौतम अंबरीषने कहेछे ॥ श्लोक॥
अंबरीष गृहे पक्वं, सदा भीष्टं यदात्मनः॥ अ
निवेद्य हरे र्भुंजन्सप्तजन्मनि नारकी ॥ १ ॥
अंबरीष नवं वस्त्रं, पानमन्नं रसादिकं॥ कृ
त्वा विष्णूपभोग्यं तु, सदा सेव्यं हि वैष्णवैः
॥२॥ अर्थः-हे अंबरीष! घरमां जे रसोई करी
होय अने जे पोताने सदा गमतुं होय, ते हरिने निवे
दन कर्या विना जो खाय तो सात जनम सुधी नरक
मां जाय. हे अंबरीष! नवुं वस्त्र, फल, अन्न, अने र-
सादिक एटले तेल, घी वगेरे विष्णुने आरोगवा ला
यक करीने वैष्णवोने सदा भोगववुं. वली श्रीम-
द्भागवतना षष्ठ स्कंधमां अदितिना प्रयोव्रतना स-
माप्तिमांना छेल्ला अध्यायमां कह्युं छे ॥ श्लोक॥

श्रीभागवते षष्ठस्कंधे अदिति पयोव्रते समास्य-
ध्याये॥ उद्वास्य देवं स्वे धाम्नि, तन्निवेदितम
ग्रतः॥ अद्यादात्मविशुद्ध्यर्थं, सर्वकामाप्तये
तथा॥ अर्थः- देवने पोताना धाममां विसर्जन क-
रीने तेमने निवेदन करेलो प्रसाद, आगलथी लई-
ने पोतानुं अंतःकरण शुद्ध थवा सारु तथा सर्व का
मना पूरी थवा सारु खावुं तेणें करीने एजे निवेदित
अर्थनो ज्यारे भगवानने अर्थे विनियोग थयो त्या
रें भगवानने आपेलो प्रसाद जाणीने लेवो ते यो
ग्य छे अने अमें आपना उच्छिष्ट खानारा दास छै
यें ए वगेरे उद्धवजीना वचनोथी सिद्ध थायछे. एव
चनो छे ते अंतःकरण शुद्ध करेछे त्यारें ठग्युं शुं?
जे भगवाननुं आपेलुं ले, ते दासनो धर्म छे तेथी ए-
म लेवानी आज्ञा अर्थथी एटले वगर हरकतें सिद्ध
थाय छे. ए रीतें तमारा भोगवेला अमें भोगविएं छै
यें. ए वचनोमां अचेतन पदार्थोनो भोग कह्यो छे,
त्यारें स्त्रीयादिकनो भोग करीएं तो दोष थाय. ए
वी शंका न करवी. भगवानना पाकादिकमां एटले

रसोई वगेरेमां एनो विनियोग थाय तेथी दोष नथी एरीतें सिद्धांत रहस्य ग्रंथमां कह्युं छे. तेनो निश्चय कर्यो त्यारें सिद्धांत रहस्यना कहेला प्रकारें चिंता थाती नथी. त्यारें कई रीतें चिंता थाय? ते प्रकारनी आज्ञा करता कहेछे. जे निवेदित वस्तु थई रह्या पछी आगल पाछी धरवा सारु उद्यम करवो, के नहीं? अने करे तो बहिर्मुखता थाय अने न करे तो सेवा थाय नहिं. वली वृत्रासुरें इंद्रप्रत्यें कह्युं छे॥ श्लोक॥

त्रैवर्गिकायासविघातमस्मत्पतिर्विधत्ते पुरुषस्य शक्र॥ ततोनुमेयो भगवत्प्रसादो, यो दुर्लभो किंचन गोचरोन्यैः॥ अर्थः-हे इंद्र! धर्म, अर्थ अने काम ए त्रिवर्गनां साधनो तेने अमारा पति भांगी नाखे छे. तेथी जे भगवान विना बीजाने जाणता नथी तेमने थाय छे अने बीजाओने दुर्लभ छे. एवी भगवत्कृपानुं अनुमान करवुं. ए वचनथी भगवाननो करेलो प्रतिबंध पण यत्न करवामां थाये, अने जो यत्न न करे, तो भोग धरवानी जणाशी घरमां होय नहिं तेथी दुःख थाय. एवी

चिंता थाय छे. एम संवादने पूरो करीने हवे ग्रंथनुं व्याख्यान श्री गुंसांईजी करे छे.

॥ मूलश्लोक ॥

चिंता कापि न कार्या, निवेदिता स्मभिः कदापि ॥ भगवानपि पुष्टिस्थो, न करिष्यति लौकिकीं च गतिम् ॥ १ ॥ ॥ ध ॥ ॥

अर्थः— जेणें निवेदन कर्युं छे, तेमणें कोई वरवतें कोई प्रकारनी पण चिंता न करवी. केमके पुष्टिमां रहेलो जीव छे तेथी लौकिक गति पण नहिं करे. हवे भावार्थ कहे छे जे कोई प्रकारनी चिंता न करवी, लौकिक चिंता तो भगवदीयने न होय पण भगवानने सारु पण चिंता न करवी. ते 'कापि' ए पदें करीने आज्ञा करे छे. एटले कोई रीतनी चिंता न करवी; सिद्धांत रहस्यनी कहेली रीतें अने तेनो सार पेदा करनारी उपर कहेली रीतें लौकिक चिंता होय नहीं अने वली पहेलां कहेली रीतें भगवानने अर्थे पण न करवी. तेथी 'कापि' पद मूक्युं छे. हवे

चिंता न करवी. तेना कारण जाणवानी अपेक्षामां कहे छे के जेणें आत्मानुं निवेदन कर्युं छे, तेणें चिंता न करवी. अने वली भगवान पण पुष्टिस्थ छे ए बे चिंता न करवानां कारण छे. अंगीकार कर्यो छे, तेणें करीने पोताना मनथीज करशे एवो विश्वास जरुर जोयें. तेथी चिंता न करवी, त्यां शंका थाय जे जरुर विश्वास जोइएं. ते केम? त्यां कहे छे जे ब्रह्मास्त्र चातक न्यायें करीने जरुर जोयें. केम के जो अविश्वास थाय तो जेम हनुमानजीने ब्रह्मास्त्रमां राक्षसोएं बांध्या पण रावणने अविश्वास थयो जे आवो मोहोटो जबर वांदर ते ब्रह्मास्त्रमां बांध्यो केम रहेशे? एवो अविश्वास थयो तेथी ब्रह्मास्त्र छूटी गयुं. एटले ब्रह्मास्त्र काम न आव्युं, तेम जो निवेदन मां अविश्वास होय, तो निवेदननुं फल न थाय, तेथी निवेदित आत्माभि ए पदें करीने सूचवेलो चिंता न करवानो हेतु ए एक हेतुनुं व्याख्यान थयुं. हवे बीजा हेतुनुं व्याख्यान करे छे जे भगवाननो पण एवो नियम छे जे जेनो अं

गीकार कर्‍यो छे, तेनुं स्वामित्व माने छे अने भगवा-
ननो अंगीकृतनुं पालन करवुं, एवो नियम छे ते उपर
श्री गीताजीनुं वाक्य. (गी. अ. ९ श्लो. २२) ॥ अ
नन्याश्चिंतयंतो मां, ये जनाः पर्युपासते ॥ ते
षां नित्याभियुक्तानां, योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
अर्थः - जे अनन्य एटले भगवानविना जेने बीजुं इष्ट
नथी ते चारे तरफथी महारुं चिंतवन करता करता म
हारा समीपमां महारो आश्रय करे छे एवा जे छे ते नि
त्य महारा सन्मुखपणायें करीने महारे विषे एकाग्र
चित्तवाला छे तेमनो योग जे प्राप्ति अने क्षेम एटले
होय तेनी रक्षा हुं चलावुं छुं. ॥ ए वचनें करीने आ
पें कह्युं जे अनन्य थईने मने भजे, अने मारे विषे जे
नुं चित्त होय, तेनो योगक्षेम हुं चलावुं छुं. ए वचनें क
रीने निश्चय थाय छे. तेमां पण विशेष बतावे छे के क
दाचित् परीक्षा सारु अथवा प्रारब्ध भोगवाववा सा
रु प्रभु निर्वाह करवामां विलंब करे तो ए पण चिंता
न करवी ते सारु कदापि शब्द मूक्यो छे, कदा अने अ
पि ए बे शब्दें करीने युक्त छे एवो इति शब्द तेणें क-

रीने चिंता न करवी, उपर कहेला बे प्रकारमांथी को
ई प्रकार थाय तो पण चिंता न करवी तेमां एज बे हे
तु छे जे एकतो निवेदितात्मा छे अने बीजो हेतु ए जे
भगवान् पुष्टिस्थ छे ते बतावबा सारु छेलुं इति पद
मूक्यूं छे इति शब्द सहित पाठ करे तो उपगीती छंद
थाय छे. वृत्तरत्नाकरमां एनुं लक्षण कह्युं छे अने
ज्यारे इति पद विना पाठ करे त्यारें वृत्तगंधी चूर्णि
का छे एम जाणवुं, छंद न जाणवो त्यारें एनो हेतु
अर्थमां कह्यो छे तेज, त्यां शंका थाय जे ए वात
खरी छे जे जीवमां पोताना आज्ञाकारिपणुं भगवा
न् जोईने एने जोइएं ते पूरुं करे छे जेम उपर गीता
जीमां कह्युं छे जे जे मने अनन्य थईने भजे, तेनो यो
गक्षेम हुं चलावुं छुं. तेम भगवान पोताने अर्थे अ-
थवा जीवने अर्थे निर्वाह करशे पण हलका अधि
कारीमां एम निर्वाह करशे के नहिं? एवी चिंता था
येज एवी शंकानुं समाधान श्री आचार्यजी करे
छे ए वात विचारीने प्रकाशमां ए श्लोकना उत्त
रार्द्धनुं अवतरण करे छे एटले एनी वांत शंका-

रूपें करीने चलावे छे जे लोकनी पेठें कोई वखत कुटुंबमां आसक्ति होय तो पोतानी पण लौकिक गति कोई वखत प्रभु करे, 'स्वस्यापि' एणें करीने भगवान् पण लौकिक मालकनी पेठें करे, जेम लौकिकना प्रभु जे राजादिक छे ते पोताना सेवकनुं पोताना काममां मन न होय अने एना पोताना घरना काममां मन होय त्यारें एम जाणे छे जे जोयें एम एनुं थाओ. तेम भगवान् पण कोई वखत एम करे, तो शुं करवुं? तेनुं व्याख्यान करे छे के जीव पुष्टिमां आव्यो छे तेथी लौकिकनी पेठें नहिं करे, केमके पोताना पणाथीज तेमनो अंगीकार कर्यो छे एवो ए जीव छे एटले पुष्टिमार्गनो छे. पुष्टिस्थ एटले भक्तिना कारणरूपी अनुग्रह वालो छे एटले जेनी उपर अनुग्रह थयो छे एवो ए जीव छे तेथी मर्यादा मार्गनां वैराग्यादि एमां न होय, तो पण लौकिक गति नहिं थाय तेथी श्री महाप्रभुजीएं एमज निवेदन कराव्युं छे. तेथी एनी पोताना संबंधीमां आसक्ति होय तोपण लौकिक गति नहिं करे.

जेम नारद ऋषिनां वचन सत्य करवा सारु नलकु
बर अने मणिग्रीव उपर अनुग्रह कर्‍यो ए वात श्री
मद्भागवतना दशमस्कंधना बीजा अध्यायमां क
हि छे. (भा० द० अ० २ श्लो० ३१) स्वयं समुत्तीर्य
सुदुस्तरं द्युमन्, भवार्णवं भीममदभ्रसौ-
हृदाः॥ भवत्पदांभोरुहनावमत्र ते, निधा-
य याताः सदनुग्रहो भवान्॥ अर्थः- सत्पुरु
षो पोतें तो सारी रीतें जन्मरूपी भयानक समुद्रने
उतरीने निर्मल स्नेहवाला छे तेथी भगवानना चर
णारविंदरूपी नाव आंहिं राखीने गया केम के.?
आप सदनुग्रह छो. भगवानने गमतो एवो जे भक्ति
मार्ग तेना चलावनारा श्री आचार्यजी छे तेमना अनु
ग्रह वालामां भगवाननो अनुग्रह सिद्ध छे केम के
पोताना जाणीने अंगीकार कर्‍यो छे तेथी लौकिक ग
ति नहिं करे. जेम वृत्रासुरें कह्युं छे ज. (भा० ष० अ०
श्लो०) ममोत्तमश्लोकजनेषु सख्यं, संसा
रचक्रे भ्रमतः स्वकर्मभिः॥ त्वन्माययात्मा
त्मजदारगेहेष्वासक्तचित्तस्य न नाथ भूया

तू ॥ अर्थः-उत्तम श्लोक जे भगवान तेमना जनमां
महारुं सखा पणुं एटले शरीर, दीकरा, अने स्त्री ते-
मां आसक्त थयेलुं छे चित्त जेनुं एवो जे हुं ते कर्मे करी
ने संसार चक्रमां भ्रमण करनारो छुं तेने उपर लखेलुं
सख्य म थाओ अने भगवानने ते कहे छे के तमारी मा
याथी आसक्त चित्त जेनुं थयेलुं छे एवो जे हुं तेने उपर
लखेलुं सख्य थाओ ॥ ए रीतें महारे कर्मे करीने
संसारचक्रमां भ्रम्यो ए न्यायें करीने प्रारब्ध एनुं
कारण छे त्यारें पोताना प्रारब्धने विचारीने चिंता न
करवी एम न जाणवुं जे भगवान उदासीन थया छे.ए
रीतें जेम वित्तजामा न करवुं तेम तनुजामां पण न क
रवुं. शरीरनुं सो कार्य न होय तोय चिंता न करवी.
एटले पहेलां कहेली रीतें पइशानी सेवा करवी.तेमां
चिंता न करवी. तेज रीतें शरीरनी सेवामां पण चिंता
न करवी. केम के लौकिक रीत भगवान नहिं करे,त्यां
मूलमां चकार छे तेनो अन्वय क्रियानी साथें थाय छे.
ए च वे अर्थमां छे एक अवधारणमां बीजो समुच्चय
मां एटले लौकिक गति नहिं करे तेम वैदिक गति पण

नहिं करे. जेम मर्यादा मार्गमां अक्षरनी प्राप्ति सारु साधननी गरज रहे छे तेम प्रभु नहिं करे अने लौकिकनी पेठें पण नहिं करें, ए समुच्चयनो अर्थ छे अने अवधारणमां सप्तमी विभक्ति लागे छे एटले लौकिकगति कांहिं पण नहिं करे. जेम चाक्रायण हतो तेने आपत्ति आवी ते वखत बीजाना खाधेला कल्माषादि अन्ननुं भक्षण कर्युं ते वेदमां संभलाय छे एरीतें भक्तिमार्गवालामां एवुं कांहिं संभलातुं नथी जेम श्री गीताजीना योगक्षेम वहन वाक्यमां कह्युं छे. ते प्रमाणे अनन्य थईने म्हारुं चिंतन करे अने सेवा पण मारी करे तेनो योगक्षेम हुं करुं छुं ए वचनमां कह्या प्रमाणे पण चिंता न करवी "सर्वत्रानुमिति" ए व्यास सूत्रमां ए वात जणाय छे हवे आथी आगल आमां एक दोष उत्पन्न थाय छे एवी आशंका पोतें करे छे एवुं श्री गुसांईजी मनमां लईने आगलनी वात चलावे छे जे एम ज्यारें थशे, त्यारें खुशीथी व्यवहार थशे एटले जेने जेम जोयें तेम चालशे अने एवो व्यवहार थाय तो बहिर्मुखता थाय ए शंकानुं श्री गुसांईजीनुं लखवुं

तेनुं व्यारव्यान श्री पुरुषोत्तमजी करे छे जे कुटुंबमां आसक्ति थई त्यारें पण जो भगवान निर्वाह चलावशे एम जाणी भोग धरवासारु कुंशाज न करवो एवा विचारें करीने स्वच्छंद व्यवहार प्राप्ति थशे. त्यारें तरेह तरेहनुं बहिर्मुख पणुं थशे एवुं संकट आवी पडे, त्यां केम करवुं? ते आज्ञा करे छे.

॥ मूल श्लोक ॥

निवेदनं तु स्मर्त्तव्यं, सर्वथा तादृशैर्जनैः॥ सर्वेश्वरश्च सर्वात्मा, निजेच्छातः करिष्यति॥ २॥

अर्थः-सर्वथा तादृशे ए पदनी रीतें आत्मादिकनुं निवेदन कर्युं छे तेथी भगवत्सेवादिकमां तत्पर तेमनी साथें (जेने आ ग्रंथनो उपदेश थाय छे) तेने निवेदननुं तो स्मरण करवुं जोइयें अने सर्वथा ए पदनी रीतें निवेदननुं स्मरण जरुर करवुं जोइयें अने सर्वदा ए पाठनी रीतें बधी वरवत निवेदननुं स्मरण करवुं जोइयें अने निवेदनंच ए पाठनी रीतें निवेदननुं पण स्मरण करवुं जोइएं. केम के सर्वना ईश्वर अने सर्वना आत्मा ए

वा भगवान छे ते पोतानी अथवा पोतानाओनी इच्छा थी करशे ॥२॥ ज्यारें आसक्ति होय, त्यारें पण निवेदननुं स्मरण करवुं एटले पछी बहिर्मुखता नहिं थाय? केम के सर्वदा भगवाननी स्मृति रहि आवशे अने अहंकार मटी जाशे. हवे निवेदननुं स्मरण करवुं कह्युं छे तेनो अभिप्राय आप श्रीगुसांईजी आज्ञा करे छे जे सदा सर्वत्र बधा काममां भगवाननुं छे एवुं स्मरण रहेशे त्यारें बहिर्मुखता नहिं थाय. तु शब्द मूक्यो छे ते एटला सारु मूक्यो छे के चित्तजा तथा तनुजा सेवानी चिंता न करवी. पण निवेदननुं तो स्मरण करवुं, ए व्याख्यान उपर श्री पुरुषोत्तमजी आज्ञा करे छे जे आत्मनिवेदन छे ते सेवानो अधिकार थावा सारु त्यारें ए संस्कार ठर्यो एवो भगवाननो अभिप्राय छे ए वात पहेलां ठेरावी छे. त्यारें सर्वदा एणें सेवा करवीज तेथी जो आत्मनिवेदन कर्या पछी सेवा करता होय त्यारें बध्धा अंशमां जड अने चेतन बधुं भगवाननुं छे. एवुं याद रहे, त्यारें बहिर्मुखता न थाय, आहिं तु

शब्दें करीने निवेदननुं स्मरण पण प्राप्त थाय छे. पछें निवेदनना स्मरण एकलानी जरुरीयात बतावी छे. एम केहे त्यां कहे छे जे पेहेला थी कह्युं छे जे बधी वखत सेवामां पण निवेदननुं स्मरण करवुं. पण जो सेवानी अशक्ति होय, तो सेवा क्यांथी थाय? तोएपण निवेदननुं स्मरण तो करवुं पण तेनी काहिं जरुर नथी, ए जाणवा सारु तु पद नथी मूक्युं, पण निवेदनना स्मरणने अनुकल्पता बतावे छे. एटले गौणता बतावे छे. एटले सेवा करवामां पण निवेदननुं स्मरण राखवुं. अने सेवा न बने तोय पण निवेदननुं तो स्मरण राखवुं. तेथी पहेलाना वाक्यमां दोष नथी. हवे पहेलां कह्युं ते दृढ करवा सारु "निवेदनं च स्मर्तव्यं" एवो पाठ छे त्यां कहे छे जे चकार छे तेथी निवेदननु पण स्मरण करवुं, एटले सेवा पण करवी, अने निवेदननु स्मरण पण करवुं. हवे सर्वथा पदनुं व्याख्यान करे छे. सर्वथा एटले जरुर करवुं, एवी आवश्यकता बोधन करे छे अथवा बीजो अर्थ ए जे सर्व प्रकारथी तादृश एटले बधी रीतिथी तेवा एटले निवेदित आत्मा पणाएं करीने

सेवा करनारा होय, तेमनी साथें स्मरण करवुं सेवा
नी अशक्ति होय त्यारें निवेदनना स्मरणने आव-
श्यकता थई, तेथी निवेदनना स्मरणने अनुकल्प
तां थई, एटले निवेदननुं स्मरण अनुकल्पताथी अ
वश्य करवुं, तेथी सर्वथा आ बीजा प्रकारमां लगा
ड्युं, आ पक्षमां तो सर्वथा तादृशो ए एकपद थयुं.
एटले सर्व प्रकारथी तेवा एटले निवेदन पणाएं करी
ने तत्पर होय एटले भगवत्पर होय, तेमनी साथें निवेद
ननुं स्मरण करवुं. ए रीतें संगदोषनुं निवारण कर्युं,
वली भगवानमां तत्पर होय तेमनी साथें निवेदननुं
स्मरण करवुं. अने एतादृश पासे ए वात गोपन कर
वी, एटले छूपी राखवी. ए वात पण सूचन करी, ए
म श्री आचार्यजीएं आज्ञा करी छे. एम श्री गुसांई
जी आज्ञा करेछे. हवे बीजा पाठनुं व्याख्यान करेछे
सर्वदा तादृशो तेमां अर्थ ए जे क्षण एक पण वच्चमां
जावा देवी नहिं एम न थाय तो आसुरावेश थशे ते
वातनो खुलासो श्रीपुरुषोत्तमजी करेछे जे ते वख
त आसुरावेश थयो केम जणाय? एवुं पूंछे त्यां कहे

छे जे अहंकारने पेदा करनारो आसुरावेश छे. हवे निवेदनना स्मरणमां बे अर्थ कह्या, सर्वदा भगवदीयपणानुं अनुसंधान अने उत्तम भगवदीयना संगें करीने दुःसंगनुं वर्जन अने दोषवाला आगल गोपन एटले छूपुं रारववुं, ए त्रण वात कही ते सर्वदा कर्याथी पांच दोष न थाय, आथी आगल प्रारब्धें करीने बहु दुःरव थाय, त्यारें पहेला कहेला त्रणमांथी हर एक न बने अने प्रभुनी सानुभावता होय, त्यारें प्रार्थना करवी के नहिं, एवी चिंता थाय, तेमां बीजो उपाय, श्री आचार्यजी आज्ञा करे छे. एवा आशयथी श्री गुसांईजी उत्तरार्द्धनुं अवतरण करे छे. के कोई वरवत लौकिक वा अलौकिक कार्य सिद्ध न थाय, त्यारें प्रार्थना करवी के नहिं? त्यां कहे छे, जे सर्वेश्वर छे अने सर्वात्मा छे ते पोतानी. इच्छाथी बधुं करशे. तेथी लौकिकमां अथवा अलौकिकमां करवी नहिं, केमके उपर कह्या प्रमाणे प्रभु सर्वना ईश्वर छे, अने सर्वना आत्मा छे, तेथी पोतानी इच्छाथी बधुं करशे. तेथी लौकिकमां अथवा अलौ

किकमां करवी नहिं केम के उपर कह्या प्रमाणे प्रभु सर्वना ईश्वर छे अने सर्वना आत्मा छे तेथी पोतानी इच्छाथी करशे वास्ते प्रार्थना न करवी. हवे ए अर्थ खुल्लो छे वास्ते ए विषे श्री पुरुषोत्तमजी लखता नथी. हवे प्रकाशमां श्री गुंसांईजी आज्ञा करे छे. सर्वना ईश्वर अने सर्वना आत्मा छे एटले निवेद न कर्युं, तेना ईश्वर तथा तेना आत्मा छे. जेम दृष्टांत के बद्धा ब्राह्मणो जमाडो, एटले निमंत्रण कीधेला होय, तेने जमाडो एम थाय छे तेम आहिं पण निवेदितनुं प्रकरण छे, तेथी सर्व शब्द निवेदित आत्माने लागे छे, आ पक्षमां सर्व शब्दनो वृत्तिसंकोच करवो पड्यो, एटले सर्व शब्द बधाने लागे छे तेने बदले संकोच करीने निवेदितनेज लगाडवो पड्यो एवी मनमां अरुचि लईने श्री गुसांईजी बीजो पक्ष आज्ञा करे छे. एटले आ पक्ष एटलोज थयो छे जे सर्व पदें करीने निवेदित लेवाय छे. निवेदित आत्माना ईश्वर अने निवेदितना आत्मा छे एम लेवाय छे. तेणें करीने शुं थयुं जे जेम सेवको सर्व प्रकारें शरण आव्या

छे. तेम प्रभुएं पण तेमने विषे स्वामी पणुं अंगीकार कर्युं छे. तथा पोताना पणुं मान्युं छे तेथी एमनुं सारु थवामां मागवानी जरुर नथी. आ पक्षमां सर्व शब्द नो संकोच करवो पड्यो छे, एवी अरुचियें करीने उपर कह्या प्रमाणे बीजो पक्ष श्री गुसांईजी आज्ञा करे छे जे सर्वना ईश्वर एटले कालादिकना पण ईश्वर छे अने बधाएना आत्मा छे. तेथी कालनो करेलो प्रतिबंध क्यारें थाय? ज्यारें भगवाननी इच्छा होय, त्यारे ज थाय. केम के कालना पण ईश्वर छे ए बतावबा सारु सर्व पद मेल्युं छे. तेथी काल पण एमनी इच्छा विना काहिं करी शकतो नथी. अने प्रार्थना करे तोय पण पोतानुं विचारेलुं ज भगवान करशे, तेथी मागवुं ए वृथा छे. आ पक्षमां तो भगवाननुं कृपालु पणुं छुप्या जेवुं थाय छे. एवी आ शंका थाय?. त्यां कहे छे जे महारा छे एम जाणीने भगवानें पोतें अंगीकार कर्यो छे, ते, निज, तेमनी इच्छाथी पोताना मनथी ज एमने जोतुं होय, ते प्रभु करशे परंतु इच्छामां अविकृत पणुं जोइएं, एटले विकार विनानी इच्छा जोइ

एं. त्यारेंज भक्तनी इच्छाथी प्रभु करे. एम बताववा सारु अव्यय प्रत्यय छे एटले निजेच्छातः हवे विकृत पणुं एटले प्रकृतिना गुणना क्षोभथी करेलुं होय, एटले लौकिक इच्छा थाय अने लौकिक इच्छा थाय ते विकृत पणुं तेथी विलक्षण ते अविकृत केहेवाय. त्यारें जे जघन्य एटले हलका अधिकारी होय ते विकृत इच्छा करे तेथी पहेला पक्ष प्रमाणे व्याख्यान,जघन्य अधिकारी सारु कर्युं छे. अने उत्तम अधिकारीनी इच्छा अविकृतछे तेथी उत्तम अधिकारीनी इच्छा अनुसार करशे ए बीजा पक्षप्रमाणे छे तेथी बेहु पक्ष छे ते उचितज छे तेथी हलका अधिकारीमां भगवान् पोतानी इच्छा प्रमाणे करेछे अने उत्तम अधिकारीमां भगवान् तेमनी एटले भगवदीयनी इच्छा प्रमाणे करेछे ए वात उपर कह्या प्रमाणे उचितज छे अने प्रार्थना तो भगवान्, सर्वना हृदयनी वात न जाणता होय अथवा उदासीन होय एटले कह्या विना न करे एम होय तो करवी. पण आहिं तो भगवान् जाणता नथी

अथवा उदासीन छे एटले भगवानने चीवट नथी एम नथी केमके पोताना छे तेना ईश्वर छे अथवा सर्वपदें करीने कालादिक लइयें तो ए पण बधुं जाणे छे केमके बधाने हुकुममां राखनारा छे अने जाण्या विना हुकुंममां राखवुं, संभवतुं नथी, तेथी बधानी वात जाणे छे - पण वली एवी शंका थाये जे जाणे छे पण चीवट नहिं राखता होय ? त्यां कहे छे जे सर्वना आत्मा छे अने आत्मा ठेर्‍या, तेथी पोतानुं काम पोतेंज करशे, अने वली पोताना आत्मा छे एटले पोतेंज छे तेथी पोतानी विनति पोतें कराय नहिं एम छतां पण पोतानी उपेक्षा करे एटले चाहे तेम थाओ तेम करे ते पोतानां अथवा भक्तनां कार्य सारु करे छे एम देखाय छे ते कई रीते ? एम कहे त्यां कहे छे जे जीवने आसक्ति बहु थाय, अथवा अहंकार थाय, अथवा कोई मार्गथी विरुद्ध चाले त्यारें ते मार्ग स्थापन करवा सारु प्रभु शाप देवरावे छे जेम के दृष्टांत, नलकुबर अने मणिग्रीवने बहु आसक्ति थई अने नारदजी आव्यां तेमनी पण लज्जा न राखी त्यां नारदजी

द्वारा शाप देवराव्यो अने चित्रकेतुने अहंकार बहु थयो तेथी तेमने पार्वतीजी द्वारा शाप देवराव्यो, अने इन्द्रद्युम्नराजा अगस्त्य ऋषि आव्यो त्यारें उठी उभा न थया तेमने ए ऋषि द्वारा शाप देवराव्यो ते मार्ग स्थापन अर्थ ए रीतें एटला कारण सारु भगवान् एम करे छे नहिं तो भगवान् एम करे नहिं. तेथी भगवान् पोताना कामसारुं विलंब थावा दे अने जीव पोतें बीजी रीतें मागे, त्यारें भगवानना काममां हरकत थाय तेथी उलटो अपराधवालो थाय अने एनुंज सारु थवा सारु भगवान वार लगाडता होय अने आ मागीने पोतानुं काम बगाडे एम थाय तेथी प्रार्थना न करवी माटे विवेक अने धैर्यनुं रक्षण पोतानी शक्ति प्रमाणे करवुं तेथी "विवेक धैर्याश्रय" ग्रंथमां कह्युं छे जे स्वामीना अभिप्रायमां संदेह छे तेथी मागवुं नहिं. वली शंका करे छे जे पहेलाना कहेलानो विचार करीयें त्यारें लौकिक अने अलौकिक सेवाना निर्वाह सारु सामग्री बाबतनी चिंता नहिं थाय तो पण कहीजे रीत

ते रीतें पोताना धर्मनी हानि बाबतनी चिंता तो थाय ज ते चिंता मटवा सारु आगल वचन श्री आचार्य जी कहे छे एम विचारीने त्रीजा श्लोकनुं श्री गुसांईजी व्याख्यान करे छे.

॥ मूलश्लोक ॥

सर्वेषां प्रभु संबंधो, न प्रत्येक मिति स्थितिः ॥ अतोन्य विनि योगेपि, चिंताका स्वस्य सोपि चेत् ॥ ३ ॥ ॥ ६ ॥ ॥

अर्थः- जेटली जणसो समर्पी छे ए बधी जणसो ने प्रभुनो साक्षात् संबंध छे पण कयी बधी जणसोनो समर्पनारो एक पुरुष तेनी साथेंज मुख्य संबंध छे एम नथी ते जणसो चेतन अने अचेतन एक बीजाना काममां आवे त्यारें पोताने शी चिंता ॥ ३ ॥ भगवानने देहादिकनुं समर्पण कर्युं अने तेनो स्त्री पुत्रादिकना काममां विनियोग थाये तवारे चिंता तो थायज एवो संदेह उत्पन्न थाय त्यां कहे छे के बध्धाने भगवाननो संबंध सरखो थयो छे एटलें

जेवो आपणने प्रभुनो संबंध थयो छे तेवोज स्त्री पुत्रा दिकने पण थयो छे तेथी भगवान सहुना पति छे माटे स्त्री पुत्रादिकनुं काम आपणे करवामां तेमज तेमने आपणुं काम करवामां दोष नथी. केम के ए बधुं भगवाननुंज छे. हवे ए समर्पण करवामां जे जणसोनुं समर्पण करवुं होय ते जणसो तथा बीजो समर्पण करनार अने त्रीजो जेने समर्पण करवुं होय ते ए त्रणे वस्तु जोइयें तेथी समर्पणमां पोतें कर्त्तापणायें करीने रह्यो छे त्यारे बीजी समर्पवानी जणसोमां कर्त्ता मुख्य त्यारे अचेतन जे देहादिक तेनो सदा भगवानमां विनियोग करवो तेमां शरीरादिक मुख्य छे त्यारें जो सेवा न करे तो स्वधर्मनी हानि थाय ए शंकानो आशय छे तेना उत्तरमां कहे छे जे पोताना आत्मा सहित जेटलाओनुं निवेदन कर्‍युं छे तेमनी साथे पोतानो पण अंगीकार छे त्यारे तेमने पण प्रभुनो संबंध थयो छे. त्यारे एमने विषे आपणो उपयोग थाय तेमां शी चिंता छे? अर्थात् कांई पण चिंता नथी ए अर्थ

स्पष्ट छे समर्पण करती वखतें जो पण कर्त्तानुं महा-
टा पणु छे तो पण समर्पण करी चूक्या पछी बध्धुं
सरखुंज छे जेम अचेतन जे वस्त्रादिक छे ते प्रभुने
अंगीकार करवाना होय तेनो परस्पर विनियोग था
य तेमां शी चिंता? जेम पीछवाई महोटी होय अने
ते सिंघासन वस्त्रने वींटली होय तो पण तेने दोष न-
थी तेनुं कारण ए जे सिंघासन पण प्रभुनुं छे बी-
जुं दृष्टांत ए के भगवानने भोग धरवानो पात्र होय
ते भगवानने आरोगवानी सामग्री उपर ढाक्युं हो
य तेमां दोष नथी केमके सामग्री भगवाननीछे ते
ना काममां आव्युं तेथी अन्य विनियोगरूपी दोष
थतो नथी तेमज चेतन वाला शरीरो जे बधाय भग
वानना छे ते परस्पर काम आवे तेमां चिंता नहीं के
मके भगवानना काममां आववा पणुं बधाने सर-
खुं छे तेम अहीं पण बध्धा भगवानना अनुचर छे
ते भगवानने काम आवे अने एक बीजाने पण का
म आवे तेमां चिंता नहिं केम के पोताना पणानुं
जे अभिमान छे तेनो त्याग करी भगवाननुंछे एम

जाणे तेथी चिंता न थाय अने निवेदन करीने बध्धा
ने भगवदीय पणुं सरखुं थयुं एटले भगवान ब
ध्धानां मालेक सरखां छे पण स्त्री पुत्रादिकमां-
थीं कोईनुं चित्त सेवामां लागतुं न होय कोई एक
नुं थोडुं लागतुं होय कोई एकनुं विशेष लागतुं
होय त्यारे जेनुं मन सेवामां न लागतुं होय अने जे
नुं थोडुं लागतुं होय तेने एम मनमां कां न आवे
जे महारो अंगीकार थयो हसे के नहीं एवी चिंता
थायज त्यारे ए चिंता केम निवृत्त थाय एवी शं
कामां कहे छे. जे स्थिति पदें करीने श्री आचार्य
जीयें आज्ञा करी छे तेनो अर्थ श्री गुसांईजी करे
छे जे निवेदन कर्याथी बध्धानो सरखो अंगीकार
थायछे एवी भक्तिमार्गनी निर्दोष मर्यादा छे अने
ज्यारें सरखो अंगीकार थयो त्यारें चिंता थायज
तांहां कहेछे जे निवेदननी एवी मर्यादा छे जे सरखो
बधानो अंगीकार थयो छे ए खरुं पण जेनुं मन से
वामां विशेष लागेछे तेनी उपर अनुग्रह विशेषछे
तेथी ते पुष्टिरूपी कारण छे एम मनमां जाणीने

चिंता न करवी ते उपर श्रीमद्भागवतनो स्कंध (३) अध्याय (१५) मांनो श्लोक कहे छे ॥ श्लोक ॥ ॥

मंदारकुंदकुरबोत्पलचंपकार्णपुन्नागनागबकुलांबुजपारिजाताः ॥ गंधेऽर्चिते तुलसिकाभरणेन तस्या यस्मिंस्तपः सुमनसो बहुमानयंति ॥ ॥

अर्थः- फूलो तो आप श्रीकंठमां धारण करेछे तेमनी सुगंध पण फूल पणायें करीने श्रेष्ठ छे पण तुलसी तो पान छे तेनी सुगंधनु भगवान आघ्राण करेछे तेथी उपर लखेला फूलो तुलसीने बहुमान आपेछे ए न्यायें करीने खुसी थवुं तेथी सुखें करीने चिंतानी निवृत्ति थाय छे अने वली लौकिक दृष्टांतथी कहेछे. जे राजाओ छे ते राणीओ परणे छे तेथी तेमने राणी पणुं तो सरखुं ज छे पण राजा जे राणीना उपर वधारे खुसी थाय छे ते मानेती थाय छे अने जे उपर खुसी नथी थाता ते अण मानेती थायछे पण मानेती अने अण मानेतीनुं राणी पणुं सरखु छे पण मान अपमान नुं कारण तो राजानी प्रसन्नता अने अप्रसन्नता

छे. तेम निवेदन जे छे ते कांई प्रसन्नता सारु नथी पण अधिकार थवासारु छे. तेथी अधिकार रूप छे एटले भगवत्सेवक थवामां अधिकार रूप छे. पण कोई ठेकाणे विशेषता देखायछे तोपण निवेदनथी थयेलो भगवत्संबंध ते कई जतो रहेतो नथी तेथी चिंता न करवी. हवे अहीं वाक्य बे छे तेमां एक तो "सर्वेषां प्रभुसंबंधो न प्रत्येकं" एटले बधाने प्रभुनो संबंध सरखोज छे पण जीवने मुख्यतायें करीने अने देहादिकने गोणतायें करीने नथी तेथी स्त्री पुत्रादिक जो सेवामां न लागे तो तेमां चिंता शानी? ए एक वाक्यनी रीते कह्युं हवे बीजा वाक्यनी रीतें कहेछे "अतोन्य विनियोगेपि चिंताका" एटले मर्यादा अंगीकारमां सरखीज छे अने पुष्टि विलक्षण छे ते माटे जो कोईनो विशेषताथी अंगीकार थाय तोपण चिंता शानी ए बीजा वाक्यनी रीतें कह्युं. हवे "चिंता का स्वस्य" ए वचनमां स्वस्य ए पद चेतनने बतावनारुं छे अने "सर्वेषां" ए वाक्यमां पण चेतन लेवा युक्त छे. अचेतन लेवा यु

क्त नथी. तेथी श्री पुरुषोत्तमजी लखेछे के श्रीगु
सांईजी विचारे छे जे पूर्वे व्याख्यान कर्युं ए अ-
युक्त छे वली भगवानने देहादिक समर्प्यां तेनो
स्त्री पुत्रादिकमां विनियोग थाय तो तेमां स्वध
र्मनी हानि तो थायज पण जो बधी वस्तु निवेदित
होय तो तेनो परस्पर विनियोग थाय त्यारें भक्ति
मार्गने बतावनारुं जे वचन जे बधी जणसो समर्पि
ने पोताना उपयोगमां लेवी तेथी चिंता शानी था
य ए व्याख्यानमां अरुचि लईने आप श्री गुसां
ईजी बीजुं व्याख्यान करेछे के स्त्री पुत्रादिकनो
अन्य विनियोग थाय तो एमां शी चिंता? केमके
तेमनो अंगीकार भगवाने कर्यो छे ए सेवा संबं-
धी चेतन छे तेनो अन्य विनियोग थाय तो शी
चिंताछे तेम पोतानो पण अन्य विनियोग थाय तो
शी चिंता. अथवा बीजी रीतें अर्थ करेछे के " स्व-
स्य" ए पद छे ते फरीथी अपि शब्द साथें बंधा
यछे एटले पुत्रादिकनो बीजामां विनियोग थाय
तो शी चिंता अने स्व एटले पोतानो पण अन्य

विनियोग थाय तो शी चिंता "स्वस्य" अहिंआं सु
धी पदनो समुदाय छे तेनो पहेला वाक्यमां संबंध
थयो त्यारें " सोपि चेत्" बाकी रह्युं तेमां सह अपि
अने चेत् ए त्रण पद छे तेनो संबंध करवा सारुं स
ह जे छे ते अपि शब्द साथें संबंध करे छे एम कही
ने अर्थनी आज्ञा करीने आगला श्लोकनुं अवरण
करेछे एटले आगला श्लोकनी वात पेदा करेछे जे
पुत्रादिक नो तेम पोतानो पण अन्य विनियोग था
य तो पण चिंता न करवी हवे श्री पुरुषोत्तमजी पो
तानो एटले केनो तेनो खोलाशो करेछे भगवानजे
ने पोतानो अनुभव बतावे ते पोतानो विशेष अं
गीकार छे एम मानता होय एटले विशेष अनु-
ग्रह वाला छेयें एम मानता होय तेमने अथवा घ
रमां जे मुख्य सेवा करवा वालो होय तेने पण शी
चिंता ते कैमुतिक न्यायने बतावनारुं आगल वच
न तेणें करीने श्री आचार्यजी बतावे छे.

॥ मूलश्लोक ॥

अज्ञानादथवा ज्ञानात्कृतमा-

त्मनिवेदनं ॥ यैः कृष्णसात् कृत-
प्राणैस्तेषां का परिदेवना ॥ ४ ॥

अर्थः- अज्ञान थकी अथवा ज्ञानथी जेमणे पोता
नुं निवेदन कर्युं छे तेमने चिंता नथी तो जेमणे प्रा
ण कृष्णने आधीन कर्याछे तेमने तो शेनीज दुःख
ना विलाप रूपी परिदेवना होय ॥ ४ ॥ हवे एनुं व्या
ख्यान श्रीगुसांईजी करेछे जे हीनाधिकारी अने म-
ध्यमाधिकारी एमणे चिंता न करवी तो उत्तम अ
धिकारीने तो चिंता शानीज करवी होय हवे हीन अ
धिकारी विगेरेनुं स्वरूप श्री पुरुषोत्तमजी आज्ञा करे
छे जे भगवान छे ते सर्व रूप पणायें एटले जगत रूप
पणायें पोतें छे अने जगत तथा मार्ग चलावनारा
अने उपदेश करनारा गुरु आदि रूप पणुं भगवानने
जछे तेनुं अने बीजुं निरवधि सच्चिदानंद रूप पणायें
करीने परम फल रूप पणुं छे तेनुं अने वगर मतलब
नी भक्तियें करीनेज पामवा लायक पणानुं जेने ज्ञान
नथी ते हीना अधिकारी गणायछे अने " कृष्णसा
त् कृतप्राणै " एटले श्रीकृष्णने आधीन प्राण जे

मणे कर्या होय ते एटले घणा वर्ष थया जेने भग
वत् वियोग थयोछे तेथी तेने घडी घडीमां ताप
क्लेश अने आनंद जे ढंकाई गयो छे ते देखाई आवे
तेथी श्वासोच्छ्वासमां श्रीकृष्णज निकळ्या करे छे ते
वात जेमां न होय अने केवल उपली बाबतनुं ज्ञान
होय ते मध्यमाधिकारी जाणवो बाकी व्याख्यान
स्पष्ट छे त्यारें शुं ठर्युं जे पोतानामां विशेष अनुग्रह
छे एवो जेणे निश्चय कर्यो छे तेने पण अन्य विनियो
ग थाय तेमां पण भगवदइच्छा कइक काम सारु ए
वी छे एम जाणवुं पण चिंता न करवी जेम परीक्षित
अने शुकदेवजी ए बे बत्रीश लक्षणीया हता पण प
रीक्षित संसारमां रह्या तेमां भगवदइच्छा मानवी ते
थी तेणे एम जाणवुं जे भगवानने महारी पासें कंई
क संसारिक कार्य करावबा हशे ते करावे छे वास्ते
चिंता न करवी हवे कोई संदेह करे जे एम शुं कर-
वा करवुं त्यां कहे छे अन्य विनियोग उपर कहेलीरीत
प्रमाणे पोताना दोषथी नथी थातो तेथी चिंता न कर
वी अने विचारे जे हमारी कई प्रवृत्ति नथी तेथी भग

वद्इच्छा मानीने चिंता न करवी माटे श्री गुसांइजी
यें आज्ञा करी के केवल प्रभुने आधीन जेमणे प्राण
कर्या छे तेमने चिंतानो विषयज नथी तेथी एमने
चिंता शानी ते माटे का एटले शी चिंता एणे करीने
कैमुतिक न्यायें करीने बताववासारु पदनो संबंध ब
तावेछे जे अज्ञानथी अथवा ज्ञानथी जेणे निवेदन क
र्युं तेणे चिंता न करवी आ ठेकाणे आम ठरेछे जे ए
कादश स्कंधमां साधुना लक्षण कह्या छे तेनी समाप्ति
मां नीचे प्रमाणे श्लोक छे ॥ श्लोक ॥ ॥ ज्ञात्वा ज्ञा
त्वाथ येवै मां, यावान्यश्चास्मि यादृशः ॥ भजं-
त्यनन्यभावेन, ते मे भक्ततमा मताः ॥ अर्थः-
जे भक्तजनो छे ते मने जाणी जाणीने एटले जेटलो
हुं छऊं अने जेवो हुं छऊं एवो जाणीने मने अनन्य
भावें भजे ते महारो भक्ततम छे ए जे भगवाननुं वच
न छे तेमां हीन अने मध्यम अधिकारी पण जो मने
अनन्य भावें करीने भजे तो तेने भक्तोत्तम पणायें क
रीने महोटाई कहीछे वली एकादश स्कंधमां कह्युं छे.
॥ श्लोक ॥ ॥ नह्यंगोपक्रमे ध्वंसो, मद्धर्मस्योद्ध

वाण्यपि ॥ मया व्यवसितः सम्यक् निर्गुणत्वा
दनाशिषः ॥ अर्थः- हे अंग एटले हे उध्धव महा-
रे जे धर्म छे तेना आरंभमां अणुमात्रनो नाश नथी
थातो केमके मे एनो सारो निश्चय कर्यो छे अने
निर्गुण छे ए रीते बे श्लोके करीने कहेछे के जे नि
ष्फल अर्थ एटले निष्काम थईने महारे विषे जे क
ल्पना करेछे ते बधो धर्मज थायछे एटले जे भया
दिकथी वृथा पुकारे एवो निरर्थक आयाश ए पण
धर्म थायछे ए बे श्लोक भगवाने कह्याछे तेमां श्रीध
रे ए श्लोकोनुं व्याख्यान नीचे प्रमाणे कर्युं छे.हे उ-
द्धवजी,जे निष्काम होय तेने महारा धर्मना आरंभमां
थोडा घणो फेरफार थाय तो पण नाश नथीज थतो के
मके मे निर्गुण पणायें एनो सारो निश्चय ठेरव्यो छे.म
नुस्मृति वगेरे मनुआदिकना मुखें करीने में नथी क
ह्या पण मेंज महारे मोहोडे कह्या एवा महारा धर्म-
मां एवुं सामर्थ्य छे तेथी महारा धर्मनो नाश नथा
य.एमां तो केहेवुंज शुं? लौकिक कर्मनुं पण तेहु जे
परमेश्वरमां निष्काम पणाथी अर्पण करे तांहां पण

धर्मपणुं छे भयथी अने शोकथी भागवुं अनें पो
कारवुं ते महारे विषे अर्पण करे तो पण धर्म थाय
तेथी निष्काम भक्तिमार्गनां धर्ममां फेरफार थई
जाय तो पण तेनो रंचक पण नाश नथी एम भग
वाने आज्ञा करी छे अने हमणा पण निवेदनरूपी
धर्म छे तेथी हीनाधिकारी अने मध्यमाधिकारीना
फलनो नाश नथी थातो त्यारे मुख्याधिकारीमां तो
शुं कहेवुं तेथी चिंता न करवी भगवानने विषे सम
र्प्याथी जे लौकिक कृत छे ते पण धर्म गणाय तेथी
कहेला विलापरूपी परिदेवना ते शी छे. अर्थात्
कांई पण नथी ए रीतें जेनुं निवेदन थयुं छे ते बाब-
तनी चिंतानुं निवारण करीने हवे निवेदन बाबतनी
चिंतानो उपाय श्रीआचार्यजी आज्ञा करे छे एम
नमां लईने श्री गुसांईजी आगला श्लोकनुं अवतर
ण करेछे सख्य ने आत्मनिवेदन ए भक्ति भगवा
न अंगीकार करे तोज थाय हवे निवेदन थयुं छे के
नहीं ते बाबदनी चिंता मटाडे छे एटले ए मटाडवा
नीं आज्ञा श्री आचार्यजी करेछे एम विचारीने श्री

गुसांईजी आगल श्लोकनुं अवतरण करेछे.

॥ मूलश्लोक ॥

तथा निवेदने चिंता, त्याज्या श्री
पुरुषोत्तमे ॥ विनियोगेपि सात्या
ज्या, समर्थो हि हरिःस्वतः ॥ ५ ॥

अर्थः- जेम निवेदन करनाराने चिंता न करवी तेम निवेदन थयुंछे के नहीं एवी निवेदन बाबतनी पण चिंता छोडवी ॥ ५ ॥ ॥ हवे सख्य अने आत्म निवेदन भगवानना कह्याथीज सिद्ध थाय पोताथी थाय नहीं प्रेम लक्षणा भक्ति तो शास्त्रमां कहेली नवभक्ति तेमांथी कोई ठेकाणे एक भक्तिथी प्रेम भक्ति सिद्ध थायछे अने नवेथी पण सिद्ध थायछे. श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण ते जीवथीज थायछे अने पादसेवन तेनो अर्थ पगें करीने पोतें दर्शन जाय एम करियें तो जीवथीज थायछे अने पादसेवनो अर्थ चरणारविंदनी सेवा एवो करियें तो त्यां सेव्यनी गरज रहेछे तेम अर्चन, वंदन अने दास्य ते पण भगवानना आप्याथीज सिद्ध थायछे

एम थयुं पण ते सेव्य स्वरूपमां चैतन्यनुं प्राकट
ज्यार सुधी न थयुं होय ते वखत पण थाय अने स
ख्य तथा आत्मनिवेदन केवल मूर्त्तिथी न थाय पण
जे भजनीय स्वरूप छे ते पोतानुं चैतन्य प्रकट क
रीने अंगीकार करे तो आत्मनिवेदन अने सख्य
थाय अने चैतन्यनुं प्राकट तो प्रेम लक्षणा भक्ति
थी थाय पण हमणा चैतन्यनुं प्राकट्य भगवान
पोतानामां देखाडता नथी एवी वखतमां आपणुं
आत्मनिवेदन थयुं छे के नहीं तेनी चिंता हीन तथा
मध्यमाधिकारीने थायछे पण जेम निवेदन कर
नारायें चिंता छोडी दीधी तेम निवेदन थयुं छे के न-
हीं ते बाबतनी चिंता पण छोडवी हवे निवेदन बाब
तनी चिंता छोडवी तेनुं व्याख्यान श्रीपुरुषोत्तम-
जी करे छे के निरोधलीलामां पोताथकी बीजानुं
भजन छोडावीने जेमणे पोताना करी लीधा एवा
जे पुरुषोत्तम तेमने विषे आपणे बध्धा प्रकारें
निवेदन कर्युं त्यारे चिंता न करवी ते बतावावा
सारु पुरुषोत्तम पद मेल्युं छे तेमां पण स्वरूपनो

आनंद आपीने रात्रदिवस तेमनुं पोषण करेछे ए
वा भक्तनो बीजे ठेकाणे उपयोग न थाय ए बता
ववा सारुं श्री पद मेल्युं छे कहेला जे निवेदन क
रनारा तेने जेम चिंता न करवी तेमनी पेठें निवे
दननी पण चिंता न करवी त्यारे शो अर्थ थयो
जे भगवद् धर्मरूपी जे निवेदनात्मक आ धर्म
छे तेथी बीजा काममां पण लागे तोयपण जेम
भगवद् धर्मनो नाश थतो नथी तेम आ निवेद-
न पण भगवद्धर्म छे तेथी आनो पण नाश था
तो नथी वली एकादश स्कंधमां कह्युंछेके, श्लो
क॥ ॥नह्यंगोपक्रमे ध्वंसो,मध्धर्मस्योद्ध
वाण्वपि॥मयाव्यवसितःसम्यक्,निर्गु
णत्वादनाशिषः॥ अर्थः-हे अंग एटले उ-
द्धव महारोजे धर्म छे तेना मारगमां अणुमात्र-
नो नाश नथी थातो केमके मे एनो सारो निश्च
य कीधो छे अने निर्गुण छे॥ एवचनथी ए धर्म
नो नाश नथी थातो तेथी चिंता छोडायछे तेम
अंगीकार बाबदनी एटले निवेदन थयुं छे के न

हीं तेनी चिंता छोडवी त्यां कहे छे जे एमां कारण शुं ए
म कहे ते उपर कहे छे श्री पुरुषोत्तममां चिंता न करवी
तेथी पुरुषोत्तम पदनी टीका करे छे एम श्री पुरुषोत्त
मजी कहे छे जेम निरोधमां बीजानी उपासना छोड-
वी ने जेमणे पोताना करी लीधा एवा पुरुषोत्तम ने
जो आपणे जईने निवेदन करियें तो जेनी एवीज रीत
छे के इंद्रनुं भजन छोडावी जेम पोताना कर्या तेम
जेणे निवेदन कीधुं छे तेनो अंगीकार करशेज माटे
चिंता न करवी एनो तात्पर्य श्री गुसांईजी बोले छे ए
म श्री पुरुषोत्तमजी लखे छे त्यारे श्री सहित जे पुरु
षोत्तम तेने विषे निवेदन कीधुं तेथी चिंता छोडवी हवे
श्रीसहित एटले भक्तसहित एवा पुरुषोत्तमने विषे
निवेदन कर्युं एटले चिंता छोडवी. गोवर्धन उद्धरणा-
दि लीलानो आनंद आपीने पोतानाओनुं पोषण क
रे छे त्यारे भगवाननो एवो स्वभाव जाणी चिंता छो
डवी त्यारे अनन्यभावथी भगवाननुं भजन करियें
तो निर्वाह करशे के नहिं करे ते शाथी जाणवुं त्यांह्यं
कहे छे के अनुमानथी जाणवुं ते अनुमान बे प्रकार

नुं छे तेमां एक तो कारण ओलखीने थाय छे जेम आ पुरुष बहु बलवान छे माटे आवुं काम करशे ते कारण लिंगिक अनुमान जाणवुं अने बीजुं कार्य एटले तेनुं काम जोईने अनुमान करवुं ते कार्य लिंगक अनुमान छे अने भगवान कार्य लिंगक अनुमान थीज जणाय छे तेथी भगवानमां निवेदन कर्या थी चिंता न करवी भक्त विषे भगवान् दयालु छे हवे श्री पुरुषोत्तमजी कहेछे जे एवी आशंका थायजे निवेदनना गद्यमां केवल भगवाननुंज नाम लीधेलुं छे अने अहिंआं तो श्री एटले भक्त सहित तेमां निवेदन केम कह्युं एवी शंका न करवी केमके एकादश स्कंधमां कह्युं छे. (भा० अ० १२ श्लोक १० मो) ॥ **रामेण सार्धं मथुरां प्रणीते, श्वाफल्किना मय्यनुरक्तचित्ताः ॥ विगाढभावेन न मे वियोग तीव्राधयोऽन्यंददृशुः सुखाय ॥१०॥** अर्थः- उद्धवजी प्रत्ये भगवाने आज्ञा करीछे जे बलदेवजी सहित मने अक्रूरजी मथुरा लई गया पण म्हारे विषे जेना चित्त रंगाई गयाछे तेमने ती

त्र विरहथी बीजुं कांई सुख थयुं नहीं ए श्लोक थीज भक्तिनुं वखाण कर्युं छे ते भक्तिना कारण पणायें करीने एकादश स्कंधना ओगणीशमा अध्यायमां आत्मनिवेदिना धर्म कह्या छे त्यांहां आत्मनिवेदननो प्रकार उघाडो जणातो नथी तेथी त्यांहांनी बधी वात लईने कल्पसूत्रनी पेठें एटले कल्पसूत्रना धर्म करे ते वेदना कहेला धर्म जेवा थाय केम के वेदमां विभागें वर्णन कर्युं छे अने कल्पसूत्रमां श्लोकवत् कह्युं छे तेमज एकादश स्कंधमां विभागें कहेलुं ते अहिंआं शांकली करीने गद्यमां कह्युं छे तेथी कृष्ण पदें करीने गद्यमां श्री गोपीजन सहित समजाय छे तेथी आंही कृष्ण पद श्री सहितनो अर्थ बतावे छे अने कृष्ण शब्दनी व्युत्पत्तिमां कृ शब्द ते परमानंद अने ष्ण शब्द जे छे ते दास्य बतावनारुं छे तेथी भक्तयुक्त भगवान छे तेनेज संप्रदान पणुं कह्युं छे अने सदानंद भगवान छे ते रसात्मक छे अने रस छे ते आलंबन विभावनी शरज राखे छे जेम नायिकाने नायकं

आलंबन छे माटे कृष्ण सदानंद अने रसरूप छे
तेथी बेनी गरज राखे छे ते माटे विरोधनी गंध पण
नथी त्यांहां वादी कहे छे जे ए वात खरी पण पो-
तानो कोई वखतें कोई रीतें बीजामां विनियोग थ
यो होय तो संदेह रूपी चिंता केम छोडी शके ए जा
णवानी आकांक्षामां श्री महाप्रभुजी उपाय आ-
ज्ञा करे छे एवुं जाणीने उत्तरार्द्धनुं श्री गुसांईजी
अवतरण करे छे कोई वखत लोकमां भयादिक पे
दा थाय तेनुं निवारण करवा सारु जीवना स्वभा
वथी अन्य विनियोग थाय तो तेमां चिंता न कर
वी " विनियोगेपि सा त्याज्या, समर्थो हि हरिः
स्वतः" ए वाक्यथी चिंता न करवी केम के हरि जे
दुःखहर्त्ता छे ते शुं आपणा कर्याथी हरि थया छे
एम नथी पण पोतानी खुसीथी हरि थया छे जेमणे ज
नावर जे हाथी तेने पण दुःखथी छोडाव्यो ते भगवान
पोते स्वभावथीज दुःख हर्त्ता छे अने पोताना मनथी करी श
के छे ते बीजाना कहेवानी गरज राखता नथी अने जीवना
साधननी पण गरज राखता नथी तेथी हरि दुःखहर्त्ता छे

माटे चिंता न करवी गफलतथी अन्यविनियोग थई जाय तो प्रभु त्याग नहीं करे केम के जीवना स्वभावथी एम ए नार्थी थयुं तो ए पण उध्धार करवाने एना साधन नी कांई पण गरज राखता नथी कोई वखत बीजा नो आंश्रय थई जाय ते वखत एना मनमां तो एम थायज जे में भुंडुं कर्युं केम के भगवान रक्षक छे अने हुं बीजानो आश्रय करुं छुं तेथी एना कार्य-लिंगनुं अनुमान करियें तो अंगीकार थयो छे पण जेने ए विषे चिंता न थाय त्यारें अंगीकार नथी थयो एम थाय त्यांहां कहे छे जे चिंता थई त्यारें एम जाणवुं जे प्रतिबंधसहित अंगीकार छे त्यां महाभारतनुं वाक्य कहे छे॥ श्लोक॥ ॥हराम्यघं मत्स्मर्तृणां हविर्भागं क्रतुष्वहं॥ वर्णश्च मे हरिश्चेष्टस्तस्माद्धरिरहं स्मृतः॥ अर्थः-जे महारुं स्मरण करे छे तेना पापने हुं हरुं छुं अने जे मां ऋत्विज अने यजमान एवो भेद न होय अने बधा पोताने सारु यज्ञ कर्त्ता होय ते यज्ञने क्रतु. कहेवो ते क्रतु तेमां होमनो भाग हुं लऊं छऊं अने

रंगमां मने लीलो रंग गमेछे तेथी हुं हरि कहेवाऊं छुं एवुं महाभारतमां कह्युं छे तेथी भगवानमां पाप मटाडनार पणुं छे ते याद करीने चिंता न करवी हवे श्री पुरुषोत्तमजी कहे छे जे दीन भावनी उत्पत्ति ए अंगीकारनुं लक्षण छे अंगीकारनुं ज्ञान थवा सारु एक लक्षण कह्युं छे अने बीजुं लक्षण श्री आचार्यजी कहे छे एम विचारीने श्री गुसांईजी बीजा श्लोकनुं अवतरण करेछे

॥ मूलश्लोक ॥

लोकेस्वास्थ्यं तथा वेदे, हरिस्तु
नकरिष्यति ॥ पुष्टिमार्गस्थि-
तो यस्मात्, साक्षिणो भवता
खिलाः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥

अर्थः- लोकमां अने वेदमां सुखथी रहेवुं ते हरि एटले दुःखहर्त्ता भगवान तो नहीं करे केमके पुष्टि एटले अनुग्रहना मार्गमां जीव छे तेथी शाक्षी बधा थाओ हवे एनुं व्याख्यान श्री गुसांईजी करेछे जे कोई वखत प्रवाहना वसथी एटले लोकमां रीत

चालेछे तेना वसथी एटले व्यापार आदि लईने लो
क अने आश्रमादि लईने जे वेदना धर्म एमां जो बं
धाई रहे तो विघ्नज थाय एम थायछे एनुं कारण शुं
एवी आशंकामां कहेछे जे षष्ठस्कंधमां वृत्रासुरे क
ह्युंछे॥ श्लोक॥ त्रैवर्गिकायासविघातम-
स्मत्पतिर्विधत्ते पुरुषस्य शक्र॥ ततोऽनु
मेयो भगवत्प्रसादो यो दुर्लभो किंचन गोचरो
ऽन्यैः॥ अर्थः- धर्म,अर्थ अने काम एना जे सा-
धनो तेनो विघात एटले भांगी नाखवुं ते अमारा प
ति जे भगवान छे ते करेछे. हे इंद्र ते थकी भगवान-
नी कृपा छे एवुं अनुमान करवुं जे एकांत मन छे ए
टले जेने भगवान विना बीजुं कंई नथी तेमनेज ए
कृपा छे ते पामवा लायक छे बीजाओने दुर्लभ छे.
ए वचनने लोक वेदमां भगवान न राखे तेनुं बीजजा
णवुं केम जे धर्म, अर्थ अने कामना साधनो अमा
रा पतिजे भगवान छे ते भांगी नाखे छे ए वचनज
बीज छे ते केम समजवुं त्यांहां कहेछे जे षष्ठस्कंध
छे ते पोषण लीला छे एटले पुष्टि प्रकरण छे तेथी

तेनुं आ वचन एमां बीज छे त्यारे वृत्रासुरने एवुं मरवानुं संकट आव्युं एवा संकटनी प्राप्तिमां पण भगवानना प्रसादनुं अनुमान थयुं तेम आ निवेदन जेणें कर्युं छे तेने पण लोकनुं अथवा वेदनुं दुःख प्राप्त थाय त्यारे जे एम जाणे के जे आ मारी उपर अनुग्रह छे एवुं मनमां आववुं ते अंगीकारनुं लक्षण छे हवे महोटुं दुःख प्राप्त थाय ते वखतें एम थाय जे भगवाने म्हारुं बगाड्युं एवो दोष मनमां आवे पण ज्यारे कईक दुःख मटे त्यारे मनमां प्रभुनो गुणज माने त्यारे एम समजवुं जे एनो प्रतिबंध सहित अंगीकार छे केमके ते भजन तो वचमां छोडी दीयेछे पण आगल भजन कर्युं छे तेनुं फल तो पाछुं भजन करे त्यारेंज मले तेथी ए भजन छोडवा जायछे पण भगवान तेने छोडवा देता नथी परंतु तेने विलंब थायछे माटे एनो प्रतिबंधसहित अंगीकार छे माटे ए भगवाननो प्रसाद छे एवुं जाणवा वालाने आप बोध करेछे "श्लोक॥ पुष्टिमार्गे स्थितो यस्मात् साक्षिणो भवताखिला॥" एटले बधामां शाक्षी थाओ अर्थात् शा-

क्षीनी पेठें भगवाननी कृति जुओ एटले एमां हर्ष शोक करवो नहीं हवे श्री पुरुषोत्तमजी कहे छे जे सप्तम स्कंधमां भगवदी जे गृहस्थ छे तेने विषे वाक्य छे ॥श्लोक॥ (भाग० स्कंध ७, अध्याय १४, श्लोक ६)

ज्ञातयः पितरौ पुत्रा भ्रातरः सुहृदोऽपरे ॥ यद्वदंति यदिच्छंति चानुमोदेत निर्ममः ॥ अर्थः — ज्ञातीवाला, पिता, पुत्र, भाई अने बीजा पण सुहृद करे अने इच्छा करतां होय तेनी ममता त्याग पूर्वक खुसीथी हा पाडवी ए सप्तमस्कंधमां भगवदी गृहस्थ प्रकरणनुं वाक्य छे तेथी पहेलां कहेली रीत प्रमाणे "शाक्षिणो भवताखिला" ए श्री आचार्यजीना वाक्यें करीने लौकिकमां अने वैदिकमां शाक्षीनी पेठें भगवाननी कृति जोवी ए पण भगवानना अंगीकारनुं लक्षण छे आहीं शंका थाय जे लोक अने वेदमां सुख न थाय तो पण शाक्षीनी पेठे भगवाननी कृति जोवानो उपदेश छे तेणे करीने त्रण दुःख सहेवारूपी धैर्यज साधन पणायें करीने कह्युं ठरे तेथी तेटलानेज करवा योग्य पणुं होय तो सेवा सारी शी

ते थाय नहीं तो निवेदनने व्यर्थपणुं तो थायज ते
थी बीजा प्रकारें करीने धर्म हानीनी चिंतानी प्राप्ति
थाय ते माटे गुरुनी आज्ञामां जेम बाध न आवे ते री
तें पहेलाथी सेवा करवी जोइयें केम के स्वेतास्वतर उ
पनिषदमां कह्युं छे ॥ श्लोक ॥ यस्य देवे परा भक्तिः
यथा देवे तथा गुरो ॥ तस्यैते कथिताह्यर्थाः प्र-
काशंते महात्मनः ॥ अर्थः-जेने देवमां परम भक्ति
होय अने जेवी देवमां होय तेवीज गुरुमां होय ते
महात्माने ए उपनिषदमां श्रुतिथी पहेलांनी श्रुतिमां
कहेला बधा अर्थो जणायछे तथा एकादश स्कंधना
ओगणीशमा अध्यायमां कह्युं छे ॥ श्लोक ॥ नैवो
पयंत्यपचितिं कवयस्तवेश ब्रह्मायुषापिकृ
तमृद्धमुदः स्मरंतः ॥ योंतर्बहिस्तनुभृतामं-
शुभं विधुन्वन्नाचार्यचैत्यवपुषास्वगतिंव्य
नक्ति ॥ ६ ॥ अर्थः-हे ईश तमे आचार्यजी अने
अंतरयामी तेना शरीरें करीने देहधारीने माटे अने
बाहेरनुं अशुभ तेने दूर करता पोताना मार्गने दे-
खाडोछो अने पोताने पमाडोछो एवा जे तमारो

उपकार तेना शब्दार्थने जाणनार एवा कवीने स्मर
ण करतां करतां वध्यो छे आनंद जेने एवा थईने ब्र
ह्मानी आयुषथी पण तमारा करेला उपकारना ब
दलाने पामता नथी एटले बदलो आपी शकता नं-
थी. ॥श्लोक॥ सेवाकृतिर्गुरोराज्ञा, बाधनं वाह
रीच्छया ॥ अतः सेवा परं चित्तं, विधाय स्थीय
तां सुखम् ॥ ॥अर्थः- पहेलाथी गुरुनी आज्ञा
प्रमाणे सेवा करवी जोइए अने हरिनी इच्छा बीजी
रीतनी होय तो गुरुनी आज्ञानो बाध थाय तो चिं
ता नहीं तेथी गुरुनी आज्ञाना बाधना पक्षमां अने
गुरुनी आज्ञाना अनुसारना पक्षमां पण सेवामां
तत्पर चित्त करीने सुखथी रहेवुं॥ तेथी सेवामां चि-
त्त राखीने सुखमां रहेवुं एटले गुरुनी आज्ञा प्र-
माणे चालतां उपर कह्या प्रमाणे कदाचित् विशेष
तायें करीने भगवाननी आज्ञा गुरुनी आज्ञाथी वि
रुद्ध थाय तो केम करवुं त्यां श्री गुसांईजी आज्ञा क
रे छे जे हरि इच्छायें करीने विकल्पें करीने एटले कोई
वखत करे अने कोई वखत न करे तेथी विकल्पें करी

ने अबाध करवो कारण के गुरुयें जे रीत बतावी छे ते प्रमाणे ज्यांहां सुधी श्री ठाकोरजी सानुभाव न होय त्यांहां सुधी करवुं अने ज्यारें श्रीठाकोरजी सानुभाव बतावे त्यारें तो जो श्रीठाकोरजी कई विशेषतायें करीने आज्ञा करे तो ते प्रमाणे करवुं तो तेमां गुरुनी आज्ञा पण पलाय हवे गुरुनी आज्ञाना बाधमां अथवा अबाधमां सेवाज मुख्यछे एवा अभिप्रायथी श्री आचार्यजी आज्ञा करे छे "अतःसेवापरं चित्तं विधाय स्थीयतां सुखं" तेथी सेवा परचित्त करीने सुखमां रहेवुं एम ज्यारे थयुं त्यारे सरवाले सुखज रह्युं हवे आगल कह्युं जे शास्त्रीनी पेठें रहेवुं ते सेवामां शास्त्रीनी पेठें रहेवुं एम नथी पण लौकिकमां शास्त्रीनी पेठें रहेवुं तेमां हरिनी इच्छानो पण विचार करवो के श्री आचार्यजीनी आज्ञामां बाध करावधानी इच्छा छे के तेने अनुसार छे पण ते खबर केम पडे एवी आशंकामां कहे छे जे कोई वखत प्रभु अनुभाव देखाडता होय तेथी खबर पडे जे आम इच्छा छे अने जेने भगवानना अनुभा

वनी खबर नथी पडती तेणे फलना बलथी इच्छा जाणवी तेथी जेवो पोतानो अधिकार ते अधिकार प्रमाणे जाणीने सेवा करवी जेम राज भोगमां मोहटा रामदासजी आंख वींचीने पंखो करता हता तेमने भगवान श्री गोवर्द्धननाथजीयें आज्ञा कीधी के हुं भोजन करुं छऊं ते तूं आंख उघाडीने जो त्यारे रामदासजीयें विनंति कीधी के मने श्री आचार्यजीयें एवी आज्ञा करी नथी तेथी प्रभु प्रसन्न थया पण त्यांहां जो एवी आशंका थाय के ऊपर तो कह्युं छे जे भगवद आज्ञा मानवी अने आंहीं तो रामदासजीने सानुभाव छतां न मानी तोए पण भगवान प्रसन्न थया तेथी एवो अभिप्राय छे जे जो कदाचित् कई विशेष आज्ञा सामग्री वगेरे धरवानी करे तो मानवी केम के ते प्रभुना सुखने अर्थे छे त्यारें एम ठर्‍युं जे प्रभु पोताना सुखने अर्थे जे आज्ञा करे ते मानवी अने जो आपणा सुख सारु गुरुनी आज्ञाथी विरुद्ध आज्ञा करे तो न मानवी एवा विभाग छे हवे

आ जे प्रकार बताव्यो तेमां सेवा मुख्य छे तेनुं बीज
ते आत्मनिवेदनना प्रकरणमां एकादशस्कंधना
ओगणीशमा अध्यायमां छे जे सेवा कन्या करवी
ते परिनिष्ठा ए बीज छे हवे कोई वरवतें पुत्रादिक
अहिंआं आदि शब्दें करीने बीजा सगा तथा द्रव्य
बधु जाणवुं तेथी पुत्रादिकना वियोगनी शंका-
थी चिंता थाय तो शुं करवुं त्यांहां कहे छे.

मूलश्लोक.

चिन्तोद्वेगं विधायापि, हरिर्यद्य
त्करिष्यति ॥ तथैव तस्य लीले
ति, मत्वा चिंतां द्रुतं त्यजेत् ॥८॥

अर्थः-हरि जे दुःख हरनारा भगवान ते चित्तमां
उद्वेग पेदा करीने पण जे जे करशे तेवीज दुःख
हर्त्तानी लीला छे एम मानीने चिंतानो त्याग क
रवो ॥ ८ ॥ चित्तमां उद्वेग उत्पन्न करे ते हरि जे
दुःखहर्त्ता भगवान तेनी ए लीला छे वास्ते चिंता
तरत छोडवी. हवे श्री पुरुषोत्तमजी आज्ञा करे छे
जे थोडुं दुःख आवे त्यारे तो हरि जे दुःखहर्त्ता छे ते

नी ए लीला छे एम जाणी चिंता छूटे पण मोंहदुं दुः
ख आवे त्यारे तो एम नथाय एटले चित्तनुं समाधा
न नथाय ए आशंका मटवा सारु जो के मूळ श्लो
कनो अर्थ उघाडो छे तेथी श्री गुसांईजीए एनी
विशेषतायें आज्ञा नथी करी परंतु श्री पुरुषोत्तम
जी एनुं तात्पर्य लखे छे के जरूर जे थनार दुः
ख छे तेनो उपाय नहीं त्यारे त्यांहां चित्तनुं समा
धान करवुं एज उपाय छे अने चित्तनुं समाधान
ज्ञानरूपी उपायथी ज थाय छे जेम सप्तम स्कंध
मां. यमना अने सुयज्ञ राजानी पत्नीना संवा
दमां कह्युं छे ॥ श्लोक ॥ (भा॰ स्कं॰ ७, अ॰ २, श्लो॰)
अहो अमीषां वच साधिकानां विपश्यतां
लोकविधिं विमोहः ॥ यत्रागतस्तत्र गतं मनु
ष्यं स्वयं सधर्मा अपि शोचंत्यपार्थं ॥ अर्थः-
जे महोटी उमरवालाओनो मोह जुओ अने लौ-
किकनी रीत जुओ जे मनुष्य ज्यांहांथी आव्युं
हतुं त्यांहां गयुं अने पोताने पण जावुं छे तेथी
शोच शानो करवो एम लौकिक रीतनुं ज्ञान करा

ध्युं जे तमे क्यां बचनारा छो त्यारें सुयज्ञना स
गानुं समाधान थयुं वली षष्ठ स्कंधना पंदरमा
अध्यायमां कह्युं छे ॥ श्लोक ॥ यथावस्तूनिप
ण्यानि हेमादीनि ततस्ततः ॥ पर्यटंतिनरेष्वे
वं जीवो योनिषु कर्तृषु ॥ अर्थः-जेम दुकाननी
जणसो छे ते आहींथी त्यां फरे छे तेम जीव पण ब
धा शरीरमां जया करे छे जेम शोनुं जेनी पासें जे-
टली वार होय तेटली वार तेनुं . तेम जीव ज्यां सुधी
जे देहमां होय त्यां सुधी ते देहनो . तेम जीवने देह
सरखो अने देहने जीव सरखो एणे करीने चित्र
केतुनुं समाधान थयुं वली एकादश स्कंधमां
कह्युं छे ॥ श्लोक ॥ पित्रो किं स्वनु भार्यायाः स्वा
मिनो ऽग्ने श्वगृध्रयोः ॥ किमात्मनः किं सुहृ
दामिति योनावलीयते ॥ अर्थः-आ जे श-
रीर छे ते शुं माबापनुं छे जे एमांथी पेदा थयुं के
स्त्रीने सुख आपे छे तेथी स्त्रीनुं थाय छे के जे
अन्न आपे छे तेनुं हशे पण छेहेली वरवते स्वा-
मी एने संग्रहतो नथी अने अग्नीमां बले छे वा गृ

ध्र पक्षी खायछे तेथी अग्निनो अथवा पक्षीनुं हशे
ए रीतें आ देह कोनो छे एम निश्चय नथी थातो के
म के ए देह बद्धाने सरखो छें तेथी सर्व साधारण देह
छे एम जाणीने पुरुरवाने समाधान थयुं एम चित्त
समाधानना प्रकार जाणवा पण ए जे चित्तना स-
माधान छे ते आत्मनिवेदनवालाने करवा योग्य न
थी त्यां कहेशो जे कां योग्य नथी त्यांहां कहेछे जे
एमां भगवानना स्मरणनी गरज नथी कारणके फ
लाणानो देह फलाणानो देह एम समाधान छे अने
आत्मनिवेदनवालाये तो बधुं भगवद्अर्पण कीधुं
छे तेथी जेम प्रभासनी लीलामां परस्पर क्लेशथी
यादवोनुं मारी नाखवुं ते लीला भगवाननी छे ते जे
म भक्तना चित्तने उद्वेग करीने लोक मर्यादानु रक्ष
ण करवा सारुं अने आगल पाछुं नित्य सुख आपवा
सारु ए लीला करी ते रीतें चित्तने उद्वेग पेदा करीने
पण हरि जे करेछे ते हरिनी लीला छे एम जाणीने
चिंता तजवी केमके प्रारब्धरूपी अघ जे पाप ते
ना हरनारा प्रभु छे त्यारे प्रारब्धादिक दोषने हरवा

सारु शुभ पणायें अथवा अशुभ पणायें साक्षात् अथवा कोई द्वारायें प्रभु दुःख हरशे एम जाणीने अमारा ईश्वर छे अने अमारा आत्मा छे एनी एवी रमत छे एमजाणीने अमारुं मोहोटुं पाप हरवा सारुं भगवाननी मायानी लीला छे एम मानीने एटले साधक बाधक जे प्रमाणो छे तेणे करीने चित्तोद्वेगने पेदा करनारी अथवा चित्तोद्वेगथी पेदा थयेली अथवा तेरूपी चिंता तरत छोडवी केमके ए चिंता पण घणो वखत सुधी चित्तमां रहे तो काल, कर्म अने स्वभाव प्रबल छे तेथी आसुरावेष रूपी महोटुं दुःख थाय अथवा मुख्य सेवा फलमां विलंब थाय तेथी तरत चिंता छोडवी ए रीतें पुष्टिमार्गनो जीवछे तेने सेवानी सामग्री तथा सेवा करनारो तेनी तथा निवेदननी चिंता छोडवाना उपाय पणायें करीने बोध कर्यो अने सेवाथी अविरुद्ध पणायें करीने शाक्षीवत् रहेवुं अने वैराग्यनुं विषय भेदे करीने स्थापन कर्युं एटले भगवाननी लीलाछे एवो बोध कर्यो अने चित्तमां ए उद्वेग थायछे ए पण प्रभुनी लीला

छे एवो उपदेश कर्यो पण आ वखतमां एम बने न
हीं केम के कलिकालनो पेदा करेलो क्षोभ तेथी चि
त्तनुं समाधान थातुं नथी ते माटे आ उपदेश छे ते अ
नुपदेश छे केम के दुःखमां चित्तनु समाधान थातु न
थी एवी आशंकामां चित्त स्थिर थवा सारु श्री आ-
चार्यजी आज्ञा करेछे एवुं विचारीने श्री गुसांईजी
आगला श्लोकनुं अवतरण करेछे. हवे अहीं सुधी
कह्युं ते तो बनी शके एवुं नथी केम के श्रवण भक्तिथी
आरंभ करीने सख्य सुधी आवे ते वार पछी निवेद
ननी वात पण एकज भक्ति सिद्ध थवी कठण छे ते
थी निवेदननी दुर्दशा छे माटे निवेदननी चिंतानुं स
माधान अने अन्य विनियोगनी चिंतानुं समाधान वृ
था छे एम विचारीने साधन फल एक करीने सर्वनुं
समाधान आप आज्ञा करेछे.

॥ मूलश्लोक ॥

तस्मात्सर्वात्मना नित्यं, श्रीकृष्णः
शरणं मम ॥ वदद्भिरेव सततं, स्थेय
मित्येव मे मतिः ॥ ९ ॥ इति ॥ ७ ॥

अर्थः- जेथी ऊपर लखेली रीते उद्वेगना त्याग वगे
रे बधु न बने एवुं छे तेथी सर्व प्रकारे सदा श्रीकृष्णः
शरणं मम कहेता रहेवुं एवीज अमारी बुद्धि छे ॥१॥
हवे श्री पुरुषोत्तमजी लखे छे जे श्रवण एटले कथा
कहे ते सांभलवुं ते दुर्लभ केम त्यांहां कहे छे भगवद्
वाचक पद अने वाक्य तेमनी शक्तिनो अने तात्पर्य
नो निर्धार करवो जेम "अग्निना सिंचति" एटले अ
ग्निये करी शींचे छे तेमां अग्निना ए पद छे अने सिं
चति ए पण पद छे अने ए बे मलीने वाक्य थाय छे ह
वे शक्ति ते जेम अग्नि एटले देवता एम जाणवुं ते श
क्ति अने अग्निना सिंचति एटले अग्नियें करीने शीं
चे छे पण एम केम बोलाय अग्नियें करीने बाले छे
एम बोलाय माटे अग्नियें करीने शींचे छे एनो ता-
त्पर्य ए समजवो के उना पाणीयें करीने झाडने शीं
चे छे एटले बाले छे तेनुं नाम तात्पर्य निर्धार ए रीतें
कथाना श्रवणमां शक्ति अने तात्पर्यनो निर्धार क
रवो एनुं नाम श्रवण ते पण गुरुना मुखथी अने ए
श्रवण करीने बीजानी पाशे कहेवुं तेनुं नाम कीर्त्त

न अने जे श्रवण कर्युं अने कीर्त्तन कर्युं ए बेनुं स्मरण करवुं तेनुं नाम स्मरण अने आ वखतमां बधा भगवानने कहेनारा वाक्यना शक्ति तात्पर्य कहेनारा गुरु ते मलवा दुर्लभ छे तेथी श्रवण पण दुर्लभ छे माटे ज्यारे श्रवण, कीर्त्तन अने स्मरण न होय त्यारे श्री भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान पण क्यांथी थाय अने पाद सेवन करे तेतो जेवा भगवान छे तेवा जाण्याविना करे ते भगवाननुं पाद सेवन पण शेनुं तेथी पादसेवन पण दुर्लभ छे तेम कालादिक पण प्रतिबंधक छे त्यारे एक एक भक्तिमां कालादिक प्रतिबंधरूप छे तेथी साधन फल एक करीने सर्व समाधान श्री आचार्यजी करेछे हवे साधन एटले श्रवणादिक भक्ति ते श्रवण आदि लईने आठ भक्ति छे ए श्रवणादिकनुं अष्टक छे ते साधन अने फल ते आत्म निवेदन माटे ए फल अने साधन बेहुने एक करीने समाधान करेछे एटले पोताना ते जीवना असाध्य पणायें करीने अर्थात् जीवथी ए साधन नथी बनतुं एम कहीने ए बधुं सुखथी थाय एवो उपाय कहेछे

ते आवी रीतेंः-के आपणाथी तो नथी बनतुं पण भ
गवानथी बनेछे तो कां सुखथी न थाये तो जेम ए सु
खें करीने थाय तेवुं समाधान आप करेछे हवे समा
धान श्री आचार्यजी करेछे एम श्री गुसांईजी एं कह्युं
हवे ते समाधान ते शुं ते कहेछे. श्रीकृष्णः शरणं मम
कह्या करवुं पण आहीं कोई शंका करे के ए समाधान
केम गणाय त्यां कहेछे के ऊपर कही जे रीत तेथी प
ण बधु न बने एवुं छे ते कारणथी ज्यारे शरण आवशे
त्यारे प्रभु बध्धुं सिद्ध करी आपशे एम विचारीने श्री
आचार्यजीएं आज्ञा करीछे हवे श्री पुरुषोत्तमजी ल
खेछेजे भक्तिमार्गमां प्रवेश कर्यो अने तेमां आश-
क्ति थवा मांडी तेमां हेतु भगवाननो अनुग्रह छे ए वा
तनो पण श्रुतियें करीने निश्चय थयोछे तेमां कह्युं के
आत्मा एटले व्यापक भगवान जेने पोताना गणेछे
तेथीज पमाय छे ए भक्ति हेतु ग्रंथमां श्री गुसांइजी
यें ठेराव्युं छे माटे अनुग्रह छेज माटे भक्तिमार्गमां
अवाय अने तेमां प्रतिबंध थाय तेमां कलिकाल,
कर्म तथा प्रारब्ध अने स्वभाव तेज प्रतिबंधक छे

काल,कर्म अने स्वभाव भगवाननो अनुग्रह छतां प्रतिबंध करे तो तेनी निवृत्ति केम थाय त्यांहां कहेछे जे सर्व नियामक प्रभु छे तेथीज थायछे बीजाथी थाती नथी तेथी भगवानने सरणे जवुं एज साधनछे अने जे कोई सरण आवे तेनी शरण राखनारो उपेक्षा करे नहीं एवी रीत छे तेथी प्रभुनी शरणागति करवी एज साधन छे अने जे शरण जायछे तेनेज एम थायछे. अहीं कोई कहेशे जे ए क्यांथी जणायु त्यांनी चेना श्रीगीताजीना वाक्यथी कहेछे ॥श्लोक॥ सर्व धर्मान्परित्यज्य,मामेकं शरणंव्रज ॥ अहंत्वा सर्व पापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि माशुचः॥ अर्थः-बध्धा धर्मोने छोडीने म्हारी एकनी शरण आव तो हुं तने सर्वे धर्म छोड्याना पापथी छोडावीश. तुं तेनी चिंता कर मा ॥ वली एकादश स्कंधना पांचमा अध्यायमां आम कह्युं छे ॥श्लोक ४१ मो॥ देवर्षिभूताप्तनृणां पितृणां, न किंकरो नायमृणी य राजन् ॥ सर्वात्मानाय शरणं शरण्यं, गतो मुकुंदं परिहृत्यकर्त्तं॥ अर्थः-देव, ऋषि, प्राणिमात्र, कुटुं-

व, मनुष्य अने पितृ तेमनो ए दास नथी अने एम
नो करजदार नथी केमके सर्व प्रकारें शरण जवा
लायक एवा जे मुकुंद भगवान तेमनी शरण गयो
छे तेथी देव, ऋषि वगेरेनो ए करजदार नथी अने
दास पण नथी एवुं करभाजन योगेश्वरनुं पण व
चन छे तेथी भगवान जे शरणे जवा योग्य छे तेथी
भगवानने शरणे जवा योग्य पणु प्राप्त थाय छे अ
हीं वादी शंका करे छे जे भगवाननीज शरणे जवुं
अने बीजा देवनी शरणे शुं करवा न जवुं ते उपरे क
हे छे जे उपर कहेलुं वचन छे के मुक्ति आपनारा भ
गवान् तेज शरण जवा लायक छे तेथी भगवानने
शरणे जवुं प्राप्त थाय छे केमके मुक्ति एज आपे
छे तेथी अंगीकार करेला जीवथी उपर कहेली रीतें
चलातुं नथी तो पण शरण जवा लायक प्रभु छे तेज
बधु सिद्ध करी आपशे एवो श्री आचार्यजीनो अ
भिप्राय छे ते आशय श्री गुसांईजीयें प्रगट करी आ
प्या छे पण शंका थाय जे प्रथमथीज "श्रीकृष्णःश
रणं मम" एम कां न कह्युं एवी शंका उपर श्री गु

सांईजी आज्ञा करेछे जे भक्तिमार्गना जेटला अंश छे तेटला बधा विचारीने अने तेमां ते बधाने प्रति बंधछे ते मटाडवानी पोतानी अशक्ति छे एम ज्यारे जाणे त्यारेज शरणागति थाय नहीं तो नहीं थाय केमके शरणागति शुद्ध निःसाधन होय त्यारेज थाय तेथीज आ प्रथमथी कह्युं नथी. हवे श्री पुरुषोत्तमजी लखेछे जे श्रीकृष्णाश्रयनी रीतें देशकाल वगेरे पोतानी सहाय करे तेवा नथी अने जेवुं तेमनुं स्वरूप छे तेवुं कलिकालमां रह्युं नथी अने विवेक जेमां आदि अने भक्ति जेना अंतमां छे एवा जे विवेक धैर्य अने भक्ति जीवथी पोताथी सिद्ध थता नथी एवो निश्चय करीने दीनभावें करीने सर्व प्रकारें करीने शरणागति थाय छे त्यारे पहेलाज एनो उपदेश करवो योग्य हतो पण हमणा सर्वेनी पछवाडे उपदेश कर्यो ते सर्व प्रकारें करीने सर्व अंशमां शरणागतिनी याद रहेवा सारु एम जाणवुं हवे तस्मात्‌नो अर्थ कहेछे. कहीं जे रीत ते रीतें बधुं न बने तेथी श्रीकृष्णःशरणं

मम एम कह्या करवुं. हवे सर्वात्मनां ए पदनुं शुं काम एम कहे त्यां कहेछे जे प्रथमथीज ए कां न कह्युं ते शंका मटाडवासारु ए पद छे केम के ए बधुं कह्या वगर तेने समजण न पडे अने कहियें त्यारेंज समजण पडे जे आ महाराथी बधुं नहीं बने त्यारे सर्वप्रकारथी शरण आवे ते सारु करीने सर्वात्मनां ए पद मूक्युं छे. हवे नित्यं ए पद बाकी रह्युं तेनो अर्थ करेछे नित्यं एटले निरंतर जेनी वचमां क्षणभर पण अंतर न पडे केमके एम न करीयें तो कालें करीने आसुरावेश थाय हवे एआसुरावेश ते शुं त्यांहां श्री पुरुषोत्तमजी कहेछे जे ग्रहादिकमां मन लगाडनारो अहंकार उत्पन्न थाय केमके ज्यारे "श्रीकृष्ण शरणं मम" कहेवुं मूकाय त्यारे तो एम आवे जे आ माहारे करवुं नहीं करुं तो बगडशे एम थावुं एज अहंकार जाणवो हवे अंतःकरणमां श्रीकृष्ण महारा रक्षक छे एम आवे अथवा न आवे तो पण एम कह्या करवुं ते सारु श्री आचार्यजीयें "वदद्भिः" एम कह्युं तेथी ए

जरूर कह्युं जोइए तेनुं तात्पर्य श्री पुरुषोत्तमजी आज्ञा करेछे जे वाणी छे ते तेजोमय छे केमके ए वी श्रुतिछे जे अग्नि छे ते वाणीरूप थईने मोढा मां पेठी छे तेथी तेजोरूप छे माटे जे बोलियें ने वै खरीं छे तोए पण वक्ता जे बोलनारो तेनी पश्यं ती वाणी ने वैखरी प्रकाश करती अंतःकरण जे आसुर धर्ममां आवृत्त छे तेने पाछुं फेरवेज केम के ते पश्यंती सुधी असर करेछे तेथी अंतःकरण मां अशर करे हवे मोढेथी कहियें तो बीजानो उप कार थाय एणें करीने लोकशिक्षा पण आनुसंगि क थाय एम कहेला प्रकारें करीने श्रीकृष्णः शर णं मम कहेतां कहेतां सेवा पर पणायें करीने रहे वुं ए स्थेयं ए पदें करीने कह्युंछे हवे अष्टाक्षरनुं मुखथी कहेवुं ते पारका उपकार सारु पण थायते सारुं कहेछे जे लोकशिक्षा पण आनुसंगिक थाय एटले पोतानी मेळे थाय आहीं शंका थाय जे ए म थयुं त्यारे आश्रयने मुख्यता आवशे केमके अंतःकरणथी थाओ अथवा मथाओ तोपण एम

करवुं कह्युं छे तेथी आश्रयने मुख्यता आवशे अ
ने जे ठकाणे सेवाने मुख्यता कही छे तेने बाध आ
वशे एम कहे त्याहां कहे छे जे एम कह्युं छे जे एम
कहेतां कहेतां सेवापर थईने रहेवुं तेथी आंहीं श
रणोपदेश जे छे ते मार्गनुं अंग छे परंतु कांई मार्ग
पणायें करीने छे एम नथी अमे अमारी समजथी
कहियें छेयें ए अर्थ इत्येवमेमतिः ए पदथी बता
वेछे तेनुं तात्पर्य ए जे श्रीकृष्णः शरणं मम कहेवा
रूपी जे शरणागति ते पण पोतानी सामर्थ्यथी
बनी शके एवुं नथी एवी आशंका करीने " यमेवै
ष " ए श्रुतियें करीने भगवान जेने वरेछे तेनेज
ए पामवा लायक छे तेथी महारी बुद्धि साधन ब
तावतामां आवी रीतनीज छे एटले अंगीकारथी
बधुं सिध्ध थाओ अथवा मथाओ पण आथी
आगल बीजो उपाय देखातो नथी तेथी कह्युं छे जे
"इत्येवमेमतिः" हवे अष्टाक्षर निरंतर कह्या करे तेनो
फलोन्मुख्य अंगीकार जाणवो अने कोई वखत
कहे अथवा कोई वखत न कहे एवानो विलंबें करी

ने अंगीकार समजवो अने जे मुदल नज कहे तेनो
तो अंगीकार नथी एम समजवुं हवे वरण एटले भ
गवाने करेलो अंगीकार अने तेनाथीज ए साधन
थाय छे तेथी सर्वे प्रकारें शरण जवुं ए पण पोता-
थी बनी शकतुं नथी ते उपर श्रीमद्भागवतना दशम
स्कंधना चालीशमा अध्यायनो अठ्ठावीशमो
श्लोक कहे छे ॥ श्लोक ॥ सोहं तवांघ्र्युपगतोऽस्म्य
सतां दुरापं तच्चाप्यहं भवदनुग्रह ईश मन्ये ॥
पुंसो भवेद्यर्हि संसरणापवर्गस्त्वय्यब्जनाभस
दुपासनया मतिःस्यात् ॥ ॥ अर्थः- असत्पु
रुषोने दुःखथी पण मले नहीं एवा जे आपनाच
रण तेनी पासें आव्यो ए पण हे ईश आपनो हुं अ
नुग्रह मानुं छुं एम अक्रूरजीयें कह्युं छे तेथा वरण
श्रुतियें करीने वरणथीज एक पामवा लायक भ
गवान छे माटे म्हारी मति आवा प्रकारनी छे जे
भगवान ज्यारें अनुग्रह करे छे त्यारेंज सर्वे प्रकारें
करीने भगवाननी शरणागति थाय छे पुरुषने ज्या
रें जन्म मरणथी छूटवानो समय आवे त्यारे हे अ

ज्ञनाभ, सत्पुरुषनी उपासनायें करीने आपने वि
षे मति थायछे अने ज्यां सुधी एम थवानुं नथी
त्यां सुधी तेम थातुं नथी तेथी आ मार्गमां शरणज
उपायछे त्यारे आ मार्गमां कृपाज कारण छे तेथी
भगवानना अंगीकारथीज मार्गमां प्रवेश थाय ते
मार्गमां रुचि वगेरे करीने वरणनुं अनुमान करीने
माहाराओने आमज करवुं जोइएं अने एम न थाय
त्यारे प्रतिबंध छे एवुं अनुमान करवुं तेथी आ श-
रणागतिरूपी साधन ते भक्तिशास्त्रमां दृढ छे अ
ने ए साधनोनुं प्रतिनिधिरूप पण एज छे एवुं बी
जुं साधन भक्तिशास्त्रमां नथी माटे श्री गीताजी
मां शोकाभावमां एज कह्युं छे ॥श्लोक॥ सर्वध
र्मान्परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज ॥ अहंत्वा स
र्वपापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि माशुचः ॥ अर्थः-ब
ध्धा धर्मोने छोडीने म्हारी एकनी शरण आव तो हुं
तने सर्वधर्म छोडवाना पापथी छोडावीश तूं तेनी
चिंता करमां. तेथी एवो निश्चय थायछे जे सर्वे प्र-
कारें श्रीकृष्णः शरणं मम कहेवुं तेथीज ए वाक्य

मां श्रीकृष्णपदछे ते भक्तसहित पुरुषोत्तमवाच
कछे ते बहु प्रसिद्ध छे .तेथी माहारुं भक्तसहित पु
रुषोत्तम छे एज शरण छे एटले बचवानुं ठेकाणुं
छे एवुं गुरुमुखथी श्रवण अने ते जेमां पहेलुं छे
एवा बीजा पण साधनो तेमनुं स्वरूप अने फल ते
मनुं सुखें करीने ज्ञान सिद्ध थायछे ए रीतें सर्व ग्रंथ
नुं व्याख्यान करीने ग्रंथना अंतमां शरण मंत्रनी
आवृत्ति करीने तेनुं प्रयोजन श्री गुसांईजी आज्ञा
करेछे जे आपणा पोताथी बनी शके एवुं नथी तेसा
रुं श्रीकृष्णः शरणं मम कहेवुं एज महारी मति छे
तेनुं तात्पर्य श्री गुसांईजी आज्ञा करेछे के जेने भ
गवान वरेछे तेनाथी ए बनेछे वास्ते एथी वधारे
अमे कंई कहेता नथी त्यां सुधी ग्रंथनुं व्याख्यान
करीने ग्रंथना अंतमां शरण मंत्रनुं कथनछे तेनुं प्र
योजन आज्ञा करेछे जे भक्तिमार्गमां जे प्रवृत्त थ
यो होय तेनी दृढता सारु आ कहियें छेयें अने ते
पण नबने त्यारें जाणवुं जे एने गरज नथी जेम सू
र्य उगे ते बधाने देखायछे ते सूर्य शुं खोटो छे न

हीं तोपण ते आंधलाना कामनो नथी तेम शरण मंत्र जे कहियें छेयें ते बने एवो छे पण जे भक्तिमार्गमां चालतो नथी केवल लौकिकमां वर्त्तेछे तेने ए काम आवतो नथी अने जे भक्तिमार्गमां चालनारो हशे तेतो कह्या करशेज जेम देखताने सूर्य कामनो छे तेम जे भक्तिमार्गमां चालतो होय तेनाज सारु आ मंत्र छे केमके भक्तिमार्गमां जे चालनारो होय तेनाथी जे जे प्रकार आ नवरत्न ग्रंथमां कह्या ते प्रमाणे न चाली शकातुं होय त्यारें एना मनमां दुःख अवश्य थाय जे हुं केम करुं म्हारा थी कह्या प्रमाणे चाली शकातुं नथी तेथी एने चिंता थाय अने ते चिंता मटवा सारुं आज उपाय करवो जे श्रीकृष्णः शरणं मम एम कह्या करवुं वास्ते ते भक्तिमार्गमां चालनाराथी बनेज. हवे श्री पुरुषोत्तमजी लखेछे जे भक्तिमार्गमां पोताना कृतार्थपणा सारु चालतो होय तेनी दृढता थवा सारु आ कहियें छेयें दृढता थवा सारु एटले आ नवरत्न ग्रंथमां कहेली रीतें अवश्य फल थाय एवो

मनमां निश्चय करीने नवरत्नमां कहेली रीतें चाल-
वुं बंध न थाय ते सारु आ नवरत्नमां सरण मंत्रनुं
आवर्त्तन छे तेथी श्री आचार्यजीयें एनो उपदेश क
र्योछे हवे अनन्य जन जे छे तेनोज उद्वेग ते मटा-
डवो जोइयें केमके भगवान अनन्यना रक्षक छे ते
थी भगवान ए अनन्यनी रक्षा नहीं करे त्यारे एनी
रक्षा कोण करशे वास्ते भगवानज करेछे एम श्री
गीताजीमां घणे ठेकाणे कह्युंछे भगवानने साधा
रण जीवने अर्थे रक्षा करवानी जरुर नथी पण जे
अनन्य छे तेना तो भगवान रक्षक छे तेथी भक्ति-
मार्गथी विमुख जे छे तेनुं अहीं कई वलवानुं नथी
अने शरण मंत्रमां एनुं कांई काम नथी केमके भ-
क्तिनुं अर्थिपणुं ए एनुं विशेषण छे अने आ तो
भक्तिमार्गथी विरुद्ध छे तेथी एमां अर्थीपणुं न-
थी माटे तेने अर्थे आ नथी एम श्री गुसांईजीयें क
ह्युंछे हवे सिद्धांत एटले शास्त्रथी निश्चय करेलो
एनुं नाम सिद्धांत तेथी आ भगवानना शास्त्रनो
सिद्धांत छे. भक्तिरूपी अमृत समुद्र तेनुं विचार

रूपी मथन कर्युं तेथी श्री आचार्यजी रूपी पंडितें
करीने आ रत्न देखाडी आव्या माटे श्री व्रजाधिप
ने मनमां धारणकरीने ते रत्नो में उज्वल कर्या
एम श्री गुसांईजी कहेछे आ ग्रंथ छे ने भगवान
ना सिद्धांतनो सार छे एम जाणवा सारु आज्ञा
करेछे हवे श्री आचार्यजीने पंडित केम कहेवा ए
म कहे त्यां कहेछे - जे सत्य असत्यने जुदुं पाडवुं
तेवी जेनामां बुद्धि होय तेनुं नाम पंडित कहेवाय.
पण आप एवाज छे एटलुं नहीं परंतु श्री भागवत
मां उद्धवजीयें भगवानने पुछ्युं जे पंडित कया त्या
रे भगवाने कह्युं जे "पंडितो बंधमोक्षवित्" एटले
जन्म मरण वगेरेने अने तेमांथी मोक्ष एटले छूटवुं
तेने जाणनारो जे होय वली श्री गीताजीमां कह्युं छे
श्लोक॥ यस्य सर्वे समारंभाः, कामसंकल्प व
र्जिताः॥ ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं, तमाहुः पंडितं
बुधाः॥ अर्थः - जेना बधा सारा आरंभो छे ते का
म संकल्प विनानाछे अने ज्ञानरूपी अग्निथी कर्म
जेणे बाली नाख्या छे तेनुं नाम पंडित जाणवो तेम

श्री आचार्यजी बंध मोक्षने जाणनारा छे अने बीजुं वचन छे ते प्रमाणे भक्तिनो विचार आपें कर्यो छे तेथी आप पंडित छे माटे एवा गुणवाला पणुं पंडित नामे करीने श्री आचार्यजीने कह्युं छे अने ए प्रमाणेना पंडित न होय तो भक्तिमार्गनो विचार न थाय अहिंआं भागवत द्वितीय स्कंधना बीजा अध्यायनुं वचन कहे छे ॥ श्लोक ॥ भगवान्ब्रह्मकार्त्स्न्येन त्रिरन्वीक्ष्य मनीषया ॥ तदध्यवस्यत्कूटस्थो रतिरात्मन्यतो भवेत् ॥ अर्थः- भगवान् एटले ब्रह्मा तेणे बुद्धिथी वेदने त्रण वखत जोया तेमांथी आत्मा जे व्यापक भगवान तेमां स्नेह थावो एज सार मल्यो ते सार ब्रह्माजीने एटली मेहनतथी मल्यो ते सारनो विचार अने विभाग बताववो ते पंडित विना कोण बतावे हवे जीव मात्रने दुःखलो थाय पण दुःखमांथी कायर थाय अने ब्रह्मलोकना सुखथी पण कायर थाय केमके ते जाणे जे आ पछी पण पाछुं दुःखनुं दुःख छे ते दुःखमां अने सुखमां वैराग थावो तेने अवलंबन भक्तिज

छे एम शांडिल्य सूत्रमां कह्युं छे ए उपर पुराणनुं
वाक्य कहे छे के ॥ यथा जलौकसां नित्यं, जीव
नं सलिलं मतं॥ तथा समस्त जीवानां, जीवनं
भक्तिरिष्यते ॥ अर्थः- जेम जलना जीव जलथी
ज जीवे छे तेम बधा जीव भक्तिना अवलंबथी ज जी
वे छे केमके जेने वैराग्य उत्पन्न थयुं तेने केम चाल
वुं ते पोतानी अकलथी करवा जाय तो आ करुं के
आ करुं के आम चालुं ते बराबर सूजे नहीं त्यारें ए
क एक करीने तेना फल बले करीने त्याग करवुं के
राखवुं एम थाय अने एम करे तो जन्म सघलो
व्यतीत थई जाय पण ते बतावनारा श्री आचा-
र्यजी छे तेथी पंडित छे हवे विवरणनुं प्रयोजन
आप आज्ञा करेछे जे व्रजना अधिपति ते रक्षाक
रनारा तेने हृदयमां धारण करीने ए रत्नने मे उ
ज्वल कर्‍या छे एटले ढंकायला हता तेने उज्वल क
र्‍या त्यारें शुं थयुं जे भगवाननी सेवामां जेनुं मन-
होय तेने पोतामां तथा पोताना संगामां भगवदी
यपणानुं अनुसंधान होयछे ते पहेला कहेला री

तें चिंतानो त्याग करे छे ते पोतानी अशक्तिनी याद राखीने अने भगवान् म्हारा रक्षक छे, एम गणीने रहे छे त्यारे उद्वेग जेनुं नाम एवो जे प्रतिबंध तेनी निवृत्तियें करीने सेवाने आधिदैविकीपणानी सिद्धि थाय छे तेथी कहीजे रीत ते रीतें पहेलाथी सेवा करतां करतां सर्व प्रकारथी शरणजवुं एज परम साधन छे तेथी नवरत्नने देखाडनारा जे वचनो तेनुं यत्न पूर्वक हुं उपासना करुंछुं तेथी व्रजरत्न जे श्री गोपीजनो तेमना हृदयने योग्य एवा भगवान म्हारा उपर कृपा करनारा थाओ एम श्री पुरुषोत्तमजी आज्ञा करे छे. ॥ शुभं भवत्विति ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥.

इति श्री गुसांईजी कृत नवरत्न प्रकाश
तथा तेनी श्री पुरुषोत्तमजी कृत
विवृत्तिनुं गुजराती भाषांतर
समाप्त.

कठण शब्दनो कोश.

कठणशब्द.	अर्थ.
१ देशकाल	द्रव्य,कर्ता,मंत्र,कर्म.
२ आनुसंगिक	वगरकरे थाये.
३ वाणी.	वेखरी,पश्यंती,मध्यमा अने परा.
४ आवृत्ति	बीजीवार कहेवुं.
५ कथन	कहेवुं.
६ फलोन्मुख अंगीकार	एनो अंगीकारफलनेतरत आपनार.
७ परिनिष्टा	चारे तरफथी.
८ मतिनिधि	बदलो.
९ कुल्मषा	बगडेला अडद.
१० अनुकल्पता	गौणता.
११ निज	पोतानाओ.
१२ जघन्य	हलका.
१३ विलक्षण	बीजीरीतनी.
१४ क्षोभ.	हरकत.
१५ श्रीसहित	लक्ष्मीरूपीजे श्री गोपीजनते सहित अर्थ बतावनारु पद.
१६ संप्रदान	आपवापणुं:
१७ अताद्दस	निवेदित आत्मा नहीं.

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	७	ए	ये
६	१५	नद्वितीय	नद्वितीयः
	३	निवृत्तमां	विवृत्तमां
८	१२	भगवदीयना	भगवदीयनो
९	१०	इयाभिप्राय	इया अभिप्राय.
११	३	धर्मगुरु	धर्मगुरुने
२८	२	एवान	एजवान
३०	६	कल्मषा	कुल्मषा
३२	२	आसक्तिहोय	अशक्ति होय
३४	११	एतादृश	अतादृश
३७	१४	छुप्याजेडुं	छुप्याजेवुं
३७	१६	ने, निज	ने भक्तो निज कहेवाय छे.
३९	१०	पोतें कराय नहीं	पोतायी कराय नहीं
४०	३	आव्यो	आव्या
४०	५	मार्गस्थापन अर्थ	मार्गस्थापनार्थ
४१	११	कयी	कंई
४३	८	धरवानो	धरवानुं
४६	५	कई	कंई
४८	६	अवरण	अवतरण
५०	४	कईक	कंईक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५०	११	लक्षणीया	लक्षणवाला
५०	१८	ह्मारी	मह्मारी
५४	९	कह्याथीज	हा कह्याथीज
५६	१४	मारगमां	आरंभमां
५७	९	बोलेछे	खोलेछे
६५	१२	वेदिक	वैदिक
६६	९	श्रुनि	आश्रुति
६६	१६	माटे	मांहे
६८	४	कई	कंई
६९	१३	कई	कंई
६९	१८	एवाविभाग	एवोविभाग
७१	१२	वच साधिकानां	वयसाधिकानां
७२	७	जया करेछे	फज्या करेछे
७२	१४	वलीयने	वसीयने
७४	८	घणो	घणा
७५	११	दुर्दशा	दिशा दूरछे
७९	१०	अर्हत्वा	अर्हत्वां
७९	१६	मृणीय	मृणीन्च
७९	१७	हृन्यकर्त्त	हृत्यकर्त्तं
८०	१६	आप्याछे	आप्योछे.